

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 14

अंक - 20

जनवरी - II , 2014

पाक्षिक

माउण्ट आबू

मूल्य - 7.50

विचारों के परिवर्तन से ही होता है मैजिक ऑफ मेडिटेशन

-- डॉ. गिरीश पटेल

बहोरा कलां - ओ.आर. सी.।

मेडिटेशन सच में जादू का कार्य करता है लेकिन इसके लिए हमारे विचारों का परिवर्तन आवश्यक है। आज हम हंसना भूल गए हैं, एक बच्चे के जैसी हंसी हमारे जीवन से गायब हो गई है। हम कहते हैं कि हमने बहुत कितानें पढ़ी, बहुत कुछ जान गये हैं लेकिन फिर भी हमारे जीवन में परिवर्तन नहीं आता है। परिवर्तन न होने का कारण है कि हम चीजों को फील नहीं करते, हमें रियलाइज़ करना है, स्वीकार करना है।

उक्त उद्गार मुम्बई से आये सुप्रसिद्ध डॉ. गिरीश पटेल ने ब्रह्माकुमारीज के बहोरा कलां, पटौदी रोड स्थित ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर में हुए त्रिदिवसीय 'दि मैजिक ऑफ मेडिटेशन' कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि जो आत्मा की वास्तविक शक्ति है उसे महसूस करना है। आज मेडिटेशन एक स्टेटस सिम्बल हो गया है लेकिन जो चीज आज फेमस हुई है वो मेडिटेशन नहीं है, वो प्राणायाम है, हठयोग है। वास्तव में उपयुक्त शब्द तो योग है, पतंजलि ने जो शब्द प्रयोग किया वो योग है।

उन्होंने आगे कहा कि मेडिटेशन मैजिक तब है, जब हम अपने स्वामन में रहते हैं। सब कुछ खो जाये लेकिन स्वामन को नहीं खोना है। आज हमने अपने स्वामन का आधार बाह्य चीजों



ओ.आर.सी.। 'दि मैजिक ऑफ मेडिटेशन' कार्यक्रम में रिट्रीट में आए श्रोताओं को राजयोग के लाभ बताते हुए मुम्बई से आये सुप्रसिद्ध ब्र.कु. डॉ. गिरीश पटेल।

को बनाया है जो कि परिवर्तनशील हैं। मेडिटेशन हमें बताता है कि स्वामन हमारे अन्दर की चीज है, कोई डिग्री व पद नहीं है। वास्तव में हम आत्मा हैं जिसने इस शरीर को धारण किया है। ये बातें हम बचपन से ही सुनते आये हैं, कोई नई बात नहीं है लेकिन हमने कभी इसका अनुभव नहीं किया। हम आत्माओं का मूलगुण शान्ति है, तो उसके लिए हमें स्वयं को शरीर से न्यारा करना होगा और परम-शान्ति का अनुभव करने के लिए परमात्मा का प्यारा होना होगा।

उन्होंने कहा कि आज हमें अपने दृष्टिकोण को परिवर्तन करने की ज़रूरत है। 21वीं सदी में हमारे हाथ में कुछ नहीं है, सिर्फ दृष्टिकोण परिवर्तन करना ही हमारे हाथ में है। दृष्टिकोण

एक दिन में सामान्य व्यक्ति लगभग 30,000 से 60,000 विचार करता है जिसमें से बहुत कम विचारों का ही हम कार्य में परिवर्तन करते हैं। डॉ. गिरीश पटेल ने कहा कि हमें अपने विचारों को शक्तिशाली बनाने के लिए हमेशा सकारात्मक एवं उच्च विचार ही करने चाहिए।

अर्थात् हम चीजों को किस एंगल से देखते हैं। दृष्टिकोण बहुत पावरफुल है। आज हम देखते हैं कि हम बहुत विचार करते हैं, एक दिन में सामान्य व्यक्ति

लगभग 30,000 से 60,000 विचार करता है जिसमें से बहुत कम विचारों का ही हम कार्य में परिवर्तन करते हैं। उन्होंने कहा कि क्या कभी हमने सोचा कि ये विचार हमें क्यों आते हैं, क्योंकि मन का स्वाभाविक कार्य है विचार करना, लेकिन हमें किस प्रकार के विचार करने हैं इस पर हम कभी ध्यान नहीं देते। जितने ज्यादा विचार हमारे मन में आते हैं उतनी उनकी क्वालिटी कम होती है।

उन्होंने कहा कि हमें अपने विचारों को शक्तिशाली बनाने के लिए हमेशा सकारात्मक एवं उच्च विचार ही करने चाहिए। मैजिक ऑफ मेडिटेशन के लिए तो हमारे विचार सिर्फ आत्मा से सम्बन्धित ही होने चाहिए। कई बार हमारे शरीर में कुछ ऐसी संवेदनायें हो

लगती हैं जिनके बारे में हमें कुछ पता भी नहीं होता, लेकिन कहीं न कहीं वो आत्मा के अन्दर पूर्व में हुई घटनाओं के प्रभाव हैं जो सूक्ष्म में समाये हैं।

हमारे मन के चार भाग हैं एक है चेतन भाग जो कि हमें वर्तमान में महसूस हो रहा है, दूसरा है अर्द्ध चेतन भाग जो हमारे अन्दर पूर्वजन्म की घटनाओं का प्रभाव है जो कि हमें नींद में ही स्वपनों के रूप में अनुभव होता है, तीसरा है सुषुप्त भाग जिसका हमें पता नहीं चलता लेकिन वो हमारे संस्कारों के रूप में प्रकट होता है। चौथा है सुपरा कॉन्सोस भाग जो कि बहुत शक्तिशाली हिस्सा है। योग की गहनता से जब हमारा वो हिस्सा जागृत होता है, तो हमारा हर संकल्प सिद्ध होने लगता है।

उन्होंने कहा कि सुबह-सुबह उठकर योग करने से हमारे शरीर में उत्पन्न रसायन कोर्टिसोल का हानिकारक प्रभाव समाप्त हो जाता है। योग का सीधा सम्बन्ध हमारी स्मृति से है। श्रेष्ठ स्थिति के लिए श्रेष्ठ स्मृति बहुत ज़रूरी है। हम सब यहाँ पर अपना अभिनय कर रहे हैं, जितना हम अपने को एक्टर समझते हैं उतना हम अपने अभिनय को अच्छे से अच्छे ढंग से करने का प्रयास करते हैं।

इस अवसर पर डॉ. गिरीश पटेल ने योग की अलग-अलग विधि भी बताई एवं शारीरिक व्यायाम भी कराया।

पांच विकार ही मनुष्यात्मा के दुश्मन

कुरुक्षेत्र। परमात्मा शिव ने ब्रह्मा मुख द्वारा गीता का ज्ञान सुनाकर मन रूपी क्षेत्र में पांच विकारों के विरुद्ध लड़ना सिखाया क्योंकि पांच विकार ही मनुष्य आत्मा के दुश्मन हैं, उसको जीतने के लिए सहज ज्ञान और सहज राजयोग सिखाया। जिन मनुष्य आत्माओं ने सीखा वो ब्राह्मण कहलाए। जिन्होंने पांच विकारों को जीता वह श्रीकृष्ण की तरह दैवी दुनिया में गए। जब उन्होंने सतयुग में जन्म लिया तो वे देवता कहलाए। वही आत्माएं जो पांच विकारों से युद्ध करते-करते शरीर छोड़ गए, क्षत्रिय कहलाये। सतयुग, त्रेतायुग में इन दोनों प्रकार के मनुष्य आत्माओं ने देवता के रूप में जन्म



कुरुक्षेत्र-हरियाणा। सीनेट हॉल में आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश के राज्यपाल जगन्नाथ पहाड़िया को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें तथा अन्य।

लिया।

उक्त उद्गार ब्रह्माकुमार बृजमोहन ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सीनेट हॉल में आध्यात्मिक कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यक्त किए। इसके पश्चात् ब्र.कु. सरोज व विश्व कल्याण सरोवर के निदेशक ब्र.कु. लक्ष्मण ने राज्यपाल जगन्नाथ पहाड़िया को ईश्वरीय सौगात दी व शीघ्र नई दुनिया की स्थापना के बारे में बताया।

ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि द्वारपर युग आने पर ये ही आत्माएं वाम मार्ग में चली गईं,

तब से विकारी जीवन शुरू हुआ। ये ही फिर शिव परमात्मा की खोज में लगीं और पूजा करने लगीं। अर्थात् ये वैश्य वर्ण कहलाए। समय बीतता गया विकार बढ़ते गए, फिर कलियुग के आने पर मनुष्य आत्माएं विकारों रूपी जंजीरों में फंस गईं। जीवन विकारी बन गया और विकारी दृष्टि होने के कारण वे शूद्र कहलाए।

उन्होंने स्पष्ट रूप से आत्मा के सतरोजो तमो स्थिति की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि किस प्रकार मनुष्य आत्माएं अपने कार्य, जाति और धर्म के आधार पर बंट गईं, जिससे सारे विश्व में नफरत और लड़ाई-झगड़े फैल गए।

अनुकरण ब्रह्मा बाबा का

परमपिता शिव ने साकार प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा जो सत्य व अति उच्च कोटि का ज्ञान दिया, सर्वप्रथम ब्रह्मा बाबा उसकी प्रतिमूर्ति बने। क्योंकि उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान के प्रत्येक रहस्य को अपने जीवन में साकार किया, इसलिए हम आत्माएं यह नहीं कह सकती कि इतनी उच्च गहन धारणाओं को जीवन में नहीं अपनाया जा सकता। ब्रह्मा बाबा एक मनुष्य थे, परन्तु उन्होंने अपने त्याग तपस्या के बल से सर्वोच्च पद प्राप्त किया। इतना ही नहीं व्यवहार की दृष्टि से वे अति महान व प्रेरक बनकर रहे। यहाँ पर हम उनको कुछ महानताओं की संक्षिप्त चर्चा करेंगे जिन्हें यदि हम भी अपने जीवन में उतारें तो हम भी उनको ही तरह महान बन जाएँ।

वे अलौकिक पिता थे

वे थे तो मनुष्य, परन्तु परमात्मा ने उन्हें प्रजापिता ब्रह्मा नाम दिया अर्थात् मनुष्य सृष्टि के आदि पिता, उनके द्वारा ब्राह्मणों को अपना बच्चा बनाया। क्यों? क्योंकि उनकी सर्व के लिए एक पिता की तरह कल्याण की भावना थी, उनमें सभी के लिए अपने बच्चों की तरह आगे बढ़ाने की कामना थी। वे बाप थे—इसलिए अपने प्रत्येक बच्चे का हर तरह से पूर्ण ध्यान रखते थे। उन्होंने सर्व को पितृवत प्यार दिया। किसी एक दो को नहीं, सबको समान रूप से शुभ-भावनाओं का दान दिया। जैसे एक बाप के मन में अपने बच्चों के लिए अकल्याण की भावना नहीं होती, वैसे ही सबने उन्हें सब बच्चों के कल्याण की कामना में रत पाया। वे संकल्प से भी किसी का बुरा नहीं चाहते थे।



- डॉ. कु. गंगाधर

उन जैसा महान बनने के लिए हमें भी यही स्नेह व कल्याण की भावना सभी के लिए रखनी होगी। चाहे कोई हमसे कैसा भी व्यवहार करे परन्तु बदले में स्नेह व कल्याण की भावना हम में ब्रह्मा बाबा के ही दर्शन करायेगी।

उनकी दृष्टि सभी के लिए महान थी

चाहे कोई गरीब हो या साधारण, योग्य हो या अयोग्य, शिक्षित हो या अशिक्षित, वे सभी को ऊँची नजर से देखते थे। कभी भी वे ये नहीं कहते युने गए कि ये बच्चा—'कोई काम का नहीं है'। वे कहते थे कि सभी ईश्वरीय सन्तान महान हैं, जिन्हें भगवान ने अपनाया है, उनसे महान भला और कौन हो सकता है। उनकी दृष्टि में सभी बच्चों के लिए बहुत रहम भी समाया होता था। तभी तो वे कहा करते थे कि बच्चे अपने को उतना महान नहीं समझते, जितनी महानता की दृष्टि से बाबा उन्हें देखते हैं। यही कारण है कि सभी बच्चे भी बाबा के प्यार में कुर्बान होने को तैयार रहते थे।

यही दृष्टि हम भी यदि दूसरों के लिए अपनायें, किसी को भी नीची दृष्टि से न देखें तो हमारी यही महानता इस सृष्टि पर हमारे अलौकिक पिता को प्रसिद्ध करेगी।

उनके बोल सभी के लिए वरदानि थे

उन्होंने अपनी मधुर वाणी से सभी के दिलों को जीत लिया था। हज़ारों आत्माओं में कोई भी ये शिकायत नहीं कर सकता था कि बाबा ने कभी उन्हें बुरा बोला था। उनके बोल से अमृत बरसता था, वे सुखदाई वाणी उच्चारते थे। उनकी मीठी शिक्षायें चुम्बकीय आकर्षण वाली थीं। अपने बोल द्वारा वे कमजोर आत्मा को भी प्रोत्साहित कर देते थे। कभी भी उन्होंने किसी को निराशा की ओर बढ़ने नहीं दिया।

हम ब्रह्मा वत्स ब्रह्माकुमार कुमारी भी यदि उनका ही अनुकरण करें तो हमारे बोल भी शक्तिशाली व वरदानि बन जाएँ। कटु वचन रूपी विष के लेन-देन से मुक्त होकर हम मधुर अमृतमय हो जाएँ और हमारा यह आदर्श व्यवहार ही सभी को साकार में प्रभु का साक्षात्कार कराये।

उनकी दृष्टि आत्मिक थी

कोई भी उनके समक्ष आता था, तो सर्वप्रथम वे उसे रुहानी दृष्टि देते थे। इसी कारण सभी उनके समुख जाते ही रहानियत का व अशरीरीपन का सहज ही अनुभव करते थे। जब से वे ब्रह्मा बने, उनकी दैहिक दृष्टि समाप्त होकर दिव्यता में बदल गई थी।

इसी प्रकार सारे दिन हमारे समक्ष भी अनेक मनुष्य आते हैं, उन्हें भी यदि हम आत्मिक दृष्टि से देखेंगे तो उनकी भी बुरी-भावनाएं समाप्त हो जाएँगी, उन्हें एक अलौकिक सा खिंचाव होगा। और वे भी प्रभु से अपना नाता जोड़ने की प्रेरणा ले सकेंगे।

वे क्षमावान थे

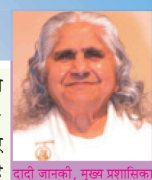
अनेक बार कई बच्चे गलती करके बाबा के समुख आते थे। उस समय उनसे बाबा का व्यवहार सचमुच सर्व-महान बनाने की प्रेरणा देने वाला होता था। वे तनिक भी ये आभास नहीं होने देते थे कि वे उनसे असन्तुष्ट या नाराज हैं बल्कि उस आत्मा को यह आभास कराते थे कि वह महान है, जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ, अब आगे बढ़ो। और जब कोई बाबा को अपनी गलती सुनाता था तो बाबा उसे पूर्णतया हल्का कर देते थे। मनुष्य भारी होकर उनके सामने आते थे और हल्के होकर खुशी से भरकर उड़ते हुए जाते थे।

यही धारणा हम सभी को भी सीखनी है। हम भी क्षमावान बनें। क्षमा करना ही महान आत्माओं की महानता है। क्षमा करके हम दूसरों को आगे बढ़ा सकते हैं, संगठन में स्नेह का वातावरण बना सकते हैं। दूसरे को क्षमा कर देना ही सिखाने का सर्वोत्तम तरीका है।

वे ज्ञान के स्वरूप बनकर रहे

यदि कोई कहे कि सत्य ज्ञान क्या है तो उनका जीवन ही इसका उत्तर था। वे ज्ञान

लाईट बनो और परमात्मा की माईट लो



डा. अनंद प्रसाद

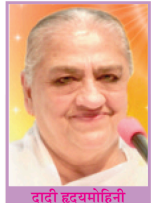
मुझे बहुत खुशी हो रही है, इतने सब परमात्मा के बच्चे यहाँ आते और मैं न देखूँ, न मिलूँ तो फीलिंग क्या होगी! इनर पीस, इनर पॉवर यह अन्दर की बात है। दुनिया में रहते पीस (शान्ति) जो है वह पीसेज पीसेज (टुकड़े-टुकड़े) हो गई है। यहाँ एक ईश्वरीय स्नेह के संग से पीस आ जाती है। वैसे शान्ति कहाँ से मिलेगी, कोई स्थान नजर नहीं आता।

शान्ति और प्रेम (LOVE) एल यानि लाइट, ओ (शिवबाबा), वी (विकट्री), ई (एवर)... तो पहले लाइट (हल्के) हो गये। किसने बनाया? एक ने। सदा के लिए विजयी हैं, फॉर एवर हैं। लव कहाँ है? मन में है या दिल में है? मन को शान्ति चाहिए, दिल को प्यार चाहिए। मन अन्दर है, दिल यहाँ है। दिल से हमारा धर्म, जाति, रंग, भाषा, भेद निकल गया। कोई डर नहीं है - हिन्दू, मुसलमान, क्रिश्चियन, पारसी हम सब एक के हैं, हम एक हैं इसलिए यहाँ आपस में बहुत प्यार है। मेरा जी चाहता है, दिन-रात आप यहाँ इसका अनुभव करो। प्यार, बच्चे को भी चाहिए, तो बूढ़े को भी चाहिए। बीमार को भी चाहिए तो तन्दुरुस्त को भी चाहिए क्योंकि अगर दिल का प्यार है तो उससे, कई ऐसे हैं

जो अपनी बीमारी भी भूल जाते हैं। तो दिल में कोई भी बात, पराई बात या पुरानी बात दिल में अगर याद करते हैं... तो करते हैं मन से, चिंतन से, दुःख की फीलिंग आती है दिल को। कोई कहता है आज मैं बड़ी खुश हूँ, क्यों? दिल को बड़ा अच्छा लग रहा है।

दूसरा प्यार नैचुरल है, जब शरीर में हैं तो माँ बाप भाई बहनों का प्यार होता है और जब इस शरीर से न्यारे हो तो परमात्मा का प्यार मिलता है। वो सर्वशक्तिवान ऐसा है जो हमारी कोई भी कमी-कमजोरी को खत्म करता है, इतना उसका प्यार है। लाईट महसूस करते हैं क्योंकि लाईट मिल गई। ऑलमाइटी है, पतित-पावन है, वण्डरफुल है। जितना उनसे प्राप्त होती है, समझ से पहचान होती है, प्राप्त दिल से होती है, बुद्धि से महसूसता होती है। इस मनुष्यात्मा को 10 कर्मन्द्रियाँ, ज्ञान इन्द्रियाँ मिली हैं, वे सब हमारे ऑर्डर में हैं। कोई लोभ मोह वश या क्रोध वश बोलने लग पड़े तो उस समय ओम् शान्ति बोलो, गुस्सा नहीं करो। कभी काम वश बुद्धि भ्रष्ट हो जाए तो काम महान शत्रु है। लोभ वश है तो सब मुझे ही चाहिए... यह रॉयल्टी नहीं है। मोह से सम्बन्धों की खींच होती है।

अहंकार तो बात मत पूछो... इसलिए हमारा नारा है पवित्र बनो योगी बनो। पढ़ाई है, बी होली बी राजयोगी। जिसको यहाँ को पढ़ाई पढ़नी है वो यहाँ आओ। फिर वो कहेगे मेरे में पांच विकार हैं, अगर किसी को वह छोड़ना हो तो उनको यहाँ मदद कर सकते हैं। विकार कोई भी हो, सब खराब ही हैं, उसमें भी कोई भी कारण से थोड़ा भी गुस्सा आया माना कहेगे बांडी-कॉन्शियस है। देखना, कैसे क्या ख्याल चलता है, सोल-कॉन्शियस में, दिन और रात का अन्तर है। मैं पुराने नये सबको कह रही हूँ, आप समझते हैं यह जरूरी है? जो समझते हैं जरूरी है हाथ उठाओ। सोल कॉन्शियस और बांडी कॉन्शियस के सही अर्थ के साथ फर्क समझो तो रीयली इतना परिवर्तन आ जायेगा, बात मत पूछो। अभी भी थोड़ा इसपर गहराई से सोचने पर सोल कॉन्शियस... जैसे बाबा याद रहे, अच्छा चेहरा मुस्कराता है। बांडी-कॉन्शियस है तो कैसे हो जाते हैं, यह रॉयल्टी नहीं है। राजयोग है यानि राजाई की नेचर हो, योग यह है। ओम् शान्ति।



डा. अनंद प्रसाद

परमात्म साथ और साक्षीपन रखेगा दुःख से दूर

टीचर्स को देख करके सभी को तो क्या बाबा को भी बहुत खुशी होती है।

आप बाबा की खुशी देख रही हैं! टीचर्स को देखकर बाबा कितने खुश हो रहे हैं और बाबा तो कहता है कि टीचर्स मेरे समान हैं क्योंकि मैं भी सेवा करता हूँ और टीचर्स भी सेवा करती हैं। तो मेरे समान कर्तव्य करने वाली यह निमित्त बहनें हैं। बाबा को भी टीचर्स का इतना रिगार्ड है, मैं तो कहती हूँ कि भगवान इतना रिगार्ड रखे, यह तो स्वप्न में भी नहीं था लेकिन अभी प्रैक्टिकल में देख रहे हैं। आप समझती हो इतना रिगार्ड है! जिस तरह भगवान हमारा रिगार्ड रखता है, कहता है मेरे समान हो, जैसे मैं सेवाधारी हूँ वैसे आप भी सेवाधारी हैं और कितनी सैलवेशन मिली है। दुनिया की आवाज़ से परे, सेन्टर का स्थान मिला है। और उस स्थान पर सुखी होंके, खुश होंके रह रही हैं। रहने का ठिकाना भी अच्छा, बुद्धि का ठिकाना भी अच्छा क्योंकि और कोई काम नहीं, एक ही काम है, जो आया है उसको सैलवेशन देके बाबा का बनाना है, बस। तो बताओ टीचर्स, इसी काम में बिजी हो ना? बाबा का कितना प्यार है टीचर्स से, आपको भी इतना प्यार है ना बाबा से। बाबा कहता है, कोई भी कैसा भी साथी मिला है

लेकिन साथ में किसके रहते हो? भले स्थूल में जो भी साथी साथ रहते हों लेकिन आपका मन तो बाबा के साथ है ना। है? थोड़ा-थोड़ा टीचर्स के स्वभाव को देख करके गडबड़ हो जाता है। बाबा कहता है, मैंने भी तो इतनों को सम्भाला है ना, स्वभाव नहीं देखा। आपको तो कितने मिलते हैं, चलो हैं 5-6 और बाबा को कितने मिले हैं? आप भी तो मिली हो ना, आप भी तो बाबा की बनी हो ना। पक्का है ना? अरे! कुमारियों को तो देख करके बाबा इतना खुश होता है... नहीं तो क्या कुमारियों की हालत होती है! यह तो इतनी बच गयी जो भगवान को साथी बन गयी और सभी उनको किस दृष्टि से देखते हैं? वैसे कुमारी के ऊपर जो दृष्टि पड़ती है वो क्या और कैसी होती थी और अभी यह देवियाँ हैं, परमात्मा की सन्तान हैं, इन्हें के नयन मस्तक से आत्मा की लाइट दिखाई देती है। बाबा ने पहले भी कहा था कि सबको यह अनुभव होना चाहिए कि इनके अन्दर आत्मा की लाइट चमक रही है। कई बहनें कहती हैं, वैसे तो सब ठीक है लेकिन जो साथी होते हैं ना वो खिटखिट करते हैं, तो बाबा कहता है तुम्हारे साथी तो थोड़े होंगे, बाबा के कितने साथी हैं। उसमें कोई-कोई तो खिटखिट भी करते होंगे लेकिन बाबा कभी भी उन्हीं को यह नहीं कहते कि यह तो है ही ऐसे!

नहीं। फिर भी मेरे हैं, मेरे हैं सो बाबा के हैं। लेकिन मेरे को जिम्मेवारी मिली है, इन्हें को साथी बना करके स्वर्ग में ले जाना, इतनी जिम्मेवारी है। हम लोग ही इस दुनिया को परिवर्तन करके स्वर्ग बना रहे हैं। उस स्वर्ग के लायक बनना, बनाना यही टीचर्स का काम है। अभी भी देखो, छोटा सा सेन्टर का स्थान है, छोटा है लेकिन सोने के लिए पलंग है, खाना तो अच्छा मिलता है, आपस में बनाके खाते तो हो! आपस में, चलो खिटखिट थोड़ी होती भी है लेकिन फिर भी देखो, आपको जैसे बाबा प्यार करता है, ऐसा प्यार किसी को मिलता है! देखो, रोज बाबा मुखली में क्या कहता है? मीठे-मीठे प्यारे-प्यारे बच्चों को गुडमॉर्निंग यादप्यार और नमस्ते, कौन करता है? हमारा बाबा। जो विश्व का पिता है, सारा विश्व जिसको याद करता है वो हमसे रोज मिलता है। रोज मिलता है ना! भले सेन्टर पर आप अलग रहते हैं, मधुबन में सदा नहीं रहते हैं लेकिन आप सभी ने बाबा से एक वायदा किया है, वो याद है? बाबा मैंने आपको दिल में बिठा लिया है, तो बिठाया है? दिल में बाबा को बिठा लिया है तो दिल की बात भूलती है क्या? तो दिल में कौन है? मेरा बाबा। और दिल में बाबा होने के कारण ऐसे अनुभव नहीं होता कि मैं अकेली हूँ। मेरे साथ बाबा है, मेरे दिल में बाबा बैठा है।

पिताश्री के साथ के अविस्मरणीय पल

पिताश्री हर तरह से एक आदर्श व्यक्ति थे

राजयोगी रमेश शाह जी अपने अनुभव इस प्रकार सुनाते हैं कि पिताश्री से मेरी पहली मुलाकात, जब वे मुंबई में आये हुए थे तब हुई। आज भी वह दृश्य मुझे याद आता है। उस समय तो मैं इस ईश्वरीय ज्ञान से परिचित नहीं था और मुझे यह भी पता नहीं था कि यह आत्मा और शरीर दोनों भाग्यशाली हैं और कि पिताश्री का शरीर परमपिता परमात्मा के अवतरण के लिए इस कलियुगी सृष्टि में साकार रथ है। फिर जब मैंने पिताश्री को पहली बार देखा तो यद्यपि मुझे उनकी महानता का परिचय नहीं था तथापि अस्पताल के एक कमरे में लेटे हुए उनको देखकर मुझे ऐसा लगा जैसे कि मैं अजन्ता और एलोरा की गुफा में शिला पर लेटे हुए महात्मा बुद्ध को देख रहा हूँ। एक धर्म-संस्थापक का ऐसा प्रतिभाशाली व्यक्तित्व तो होता ही है कि उससे मिलने वाले सामान्य नर पर उसका प्रभाव पड़ता है, उतना सम्माननीय व्यक्तित्व पिताश्री का था। उनका स्थान वास्तव में एक धर्म-संस्थापक से भी बड़ा है - यह बात तो मुझे बाद में मालूम हुई परन्तु यह संकल्प तो मेरी बुद्धि में तब से ही चल रहा था कि यह अवश्य ही कोई बहुत महान् आत्मा है। पहले नम्बर का पद पाने के लिए पहले नम्बर का विद्यार्थी बनना पड़ता है। अब हम सभी यह जानते हैं कि परमपिता परमात्मा हम सभी आत्माओं के सच्चे

शिक्षक हैं, वे पिताश्री के तन द्वारा ज्ञान मुरली सुनाते थे। परन्तु जब हम साक्षी होकर विचार करते हैं तो ख्याल आता है कि कई बार ऐसा भी होता होगा कि मुरली चलाते-चलाते परमपिता परमात्मा अपने कर्तव्यों को पूर्ण करने के लिए उसी सौभाग्यशाली रथ से थोड़े समय के लिए छुट्टी लेते होंगे। परन्तु यह आदर्श विद्यार्थी इतनी आसान रीति से अपने शिक्षक का स्थान भरकर मुरली का कार्य चालू रखते थे कि यह अन्तर बड़ी मुश्किल से बहुत ही कम ब्रह्मावत्सों को मालूम पड़ता था। अर्थात् ब्रह्मा बाबा आदर्श विद्यार्थी, इतनी अच्छी रीति से अपने शिक्षक परमात्मा का ज्ञान-दान देने का कर्तव्य करते थे कि दोनों की वाणी में बहुत ही सूक्ष्म भेद रहता था। उनकी वाणी में इतनी शक्ति, भाषा में दिव्यता, शब्दों में ललकार, शैली में सौजन्य था कि वो वाणी अन्धे को रोशनी, लूने को सहायक, गूंगों को संकेत, उलझे हुए लोगों को सुलझाने वाली तथा अशक्त को शक्तिप्रदायक थी।

एक बार मुंबई में हम बाबा के साथ घूमने गये थे। तब मैंने एक छोटा-सा प्रस्ताव बाबा के सामने रखा - 'बाबा, जब आप ज्ञान-मुरली चलाते हैं तब मुरली की प्वाइंट्स कॉपी में नोट करने का मन होता है। साथ-साथ यह भी मन होता है कि उस समय आपके मुख-कमल को तरफ देखते हुए ज्ञानागत का पान करते रहें। आप अपनी मुरली के लिए तैयारी जरूर करते होंगे। वो

तैयारी नोट्स हमें जरूर पहले से दे दीं। जायें ताकि बाद में उनकी नकल करना आसान हो जाये और उस समय हम केवल मुरली सुनें।' पिताश्री मुरली चलाने से पहले नोट्स (भाषण की रूप-रेखा) बनाते होंगे - ऐसी कल्पना इसलिए हुई क्योंकि सब बड़े-बड़े विद्वान, पंडित, आचार्य, शास्त्री ऐसे भाषण तैयार करते हैं। मैंने सोचा कि जैसे एक वकील या बैरिस्टर अपने ब्रीफ (सार) तैयार करता है, वैसे ही बाबा भी करते होंगे। मैंने जब ऐसा निवेदन किया तो उन्होंने पूछा कि कौन-से नोट्स? जब मैंने अपना संकल्प बाबा के सामने स्पष्ट रूप से रखा तो वे बोले - 'मैं तो बिल्कुल तैयारी नहीं करता।' पिताश्री ने कोई किताब पढ़कर सुनाते, न किसी किताब का ब्योरा अथवा हवाला देते। बाबा थोड़े ही समय अखबार पढ़ते थे। परन्तु मुरली के लिए किसी भी प्रकार की पहले से तैयारी नहीं करते थे बल्कि जो कहना होता था वह तत्काल ही कहते थे। उनकी स्वतः स्फुरित वाणी, उनकी बुद्धि के चमत्कार और विचारों की गहराई का प्रतीक है।

ब्र.कु.रमेश शाह अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज



पिताश्री स्नेह और शक्ति के अद्भुत मिश्रण थे

चण्डीगढ़ से राजयोगी अमीर चन्द जी अपना अनुभव लिखते हैं कि बाबा के कमरे में प्रवेश करते ही हमने देखा कि बाबा दो-तीन बहन-भाइयों से मुलाकात कर रहे थे। स्नेह का सागर उमड़ रहा था। बहन-भाइयों के नयनों से तो स्नेह की धारा बह रही थी, बाबा के नयन भी गीले दिखाई दिये। हम उनके पीछे बैठ गये। उनसे मिलने के बाद जब बाबा की दृष्टि हम बच्चों पर पड़ी तो मुझे लगा कि मेरे शरीर में एक बहुत शक्तिशाली करंट का प्रवाह बहने लगा है। शक्तिशाली अनुभव करने के बाद बाबा के नयनों से असीम स्नेह का आभास होने लगा। कानों में जैसे कोई बहुत धीरे से, मधुरता से कह रहा हो - मीठे बच्चे, आराम से पहुँच गये? आओ बच्चे! आओ बच्चे!! ऐसे लगा जैसे कि अनेक जन्मों की प्रभु-मिलन की प्यास तृप्त हो रही हो। पल बीतते जा रहे थे परन्तु मेरे लिए स्वयं को रोकना कठिन होता जा रहा था। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं अपने स्थान से कब उठा और बाबा की गोद में समा गया। स्नेह और शक्ति का अद्भुत मिश्रण था। बाबा का शरीर अति कोमल लेकिन उसके चारों ओर लाईट ही लाईट दिखाई पड़ रही थी। देह का भान समाप्त हो गया था। कुछ समय के बाद बाबा ने बहुत ही दुलार से मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए मुझे सचेत किया। नयन गीले, शरीर हल्का, आत्मा आत्म-विश्रवसा रूपी शक्ति से ओत-प्रोत थी।

ब्र.कु.अमीर चंद जोनल इंचार्ज (पंजाब जोन), ब्रह्माकुमारीज



मेरी नजरें 'कोहिनूर हीरे' को ढूँढ़ रही थीं

मधुबन की ब्र.कु. मोहिनी बहन जी अपने अनुभव में कहती हैं कि आखिर मेरा स्वप्न साकार हुआ। आबू पर्वत की गोद में बसा हुआ शान्त, मीठा, तपोवन, 'मधुबन स्वर्गाश्रम' मेरे सामने था। मैंने अन्दर कदम रखा तो मुझे ऐसा लगा कि मैं यहाँ की हर चीज और हर व्यक्ति से पहले से ही परिचित हूँ। शुभ वस्त्रधारी बहनों एवं भाइयों के तपस्वी चेहरों ने मधुर मुस्कान से मेरा स्वागत किया। परन्तु मेरी नजरें तो इस मधुबन रूपी सुन्दर डिब्बी के अन्दर रहने वाले उस 'कोहिनूर हीरे' को ढूँढ़ रही थीं जिससे मिलने को मैं व्याकुल थी। वह घड़ी भी आ पहुँची जब मुझे ब्रह्मा बाबा से मिलाने के लिए उनके कक्ष में ले जाया गया। मैंने सामने बाबा को देखा और अपलक देखती ही रह गयी। श्वेत वस्त्रधारी, लम्बा-ऊँचा, उन्नत ललाट, असाधारण एवं आकर्षणमय व्यक्तित्व - जिनके चेहरे से ज्योति की आभा फूट रही थी, आँखों से वात्सल्य, प्रेम, शक्ति, दया सब कुछ एक साथ ही झलक रहा था। जिनके होठों पर एक मधुर मुस्कान थी - मेरे सामने था। उस क्षण मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे कि उन्होंने मेरी समस्त शक्तियों को अपने वश में कर लिया हो और मेरे मन-बुद्धि बिल्कुल शान्त होकर रह गये हों। बाबा के चरित्र रमणीक भी थे और शिक्षाप्रद भी। बाबा का हर एक कर्म हम बच्चों के लिए आदर्श था। आज भी मुझे बहुत-सी समस्याओं का हल बाबा के चरित्रों के स्मरण से ही प्राप्त हो जाता है कि ऐसी स्थिति में बाबा ने क्या किया था।

ब्र.कु.मोहिनी अध्यक्ष, ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज



पिताश्री जी को देखते ही लगा कई बार देखा है

ब्र.कु.प्रेम बहन जी अपना अनुभव सुनाती हैं कि 14 वर्ष की आयु में मैं हिन्दू नव संवत पर पहली नवरात्रि के दिन लौकिक माँ के साथ शीतला देवी के दर्शन करने गयी थी, जहाँ नानी जी से भेंट हुई और उन्होंने बताया कि माउण्ट आबू से देवियाँ आई हुई हैं। वे आपके घर के पास ठहरी हुई हैं। उनके भी दर्शन करने जाओ। अतः माताजी और मैं नानी के साथ सेवाकेन्द्र पर गये। उस समय क्लास चल रहा था। मुरली तो कुछ सझ में नहीं आई परन्तु वहाँ के शान्त और पवित्र वातावरण ने मन को आकर्षित अवश्य कर लिया। मेरी माताजी को वहाँ बहुत साक्षात्कार होने लगे। इसलिए वह बहुत जल्दी निश्चय-बुद्धि बन नित्य क्लास में जाने लगीं। एक दिन दादी निर्मलशान्ता जी अमृतसर आई



छोटा उदेपुर। आदिवासी जागृति अभियान का हरी झण्डी दिखाकर शुभारंभ करते हुए तालुका पंचायत प्रमुख वानु बेन वसावा। साथ हैं ब्र.कु.मोनिका, अभियान यात्री तथा अन्य।



फरीदाबाद। संजय भाटिया, पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेटर, खेल समीक्षक, आलोचक को स्नेह मिलन कार्यक्रम के पश्चात् मीडिया की सेवाओं से अवगत कराते हुए ब्र.कु.कौशल्या।



अरबपुर। गीतों द्वारा राजयोग शिबिर के उद्घाटन समारोह में ब्र.कु.अविनाश को सम्मानित करते हुए पुलिस अधीक्षक शिव सागर सिंह तथा साथ हैं ब्र.कु.नीरू।



इन्दौर-म.प्र.। अलविदा तनाव शिबिर का उद्घाटन करते हुए खजुराना गणेश मंदिर के पुजारी अशोक भट्ट, धर्मेश भट्ट, ब्र.कु.नगीना, ब्र.कु.पूमत तथा अन्य।



नेपिचर टाऊन। राजकीय मेडिकल कॉलेज, नर्स हॉस्टल में सम्बोधित करते हुए डॉ. अवधेश शर्मा। साथ हैं डॉ. श्यामजी रावत, डॉ.पुष्पा पाण्डे तथा ब्र.कु.धुमि।

तो लौकिक माँ ने बताया कि ब्रह्मा बाबा की बेटा आई है, आप उनसे जरूर मिलो। उत्सुकतावश मैं सेन्टर पर गयी। दादी निर्मलशान्ता जी यथा नाम तथा गुणमूर्त देख मुझे बहुत ही खुशी हुई। ज्ञान चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि जीवन का सच्चा सुख ईश्वर से ही प्राप्त हो सकता है। प्रथम बार प्यारे साकार बाबा से दिल्ली रजौरी गार्डन में मिलने का सौभाग्य मिला। मैंने जैसे ही बाबा को देखा, बहुत देर तक अपलक निहारती रही और मुझे इतनी स्पष्ट स्मृति आने लगी कि जैसे इसी जीवन में मैंने बाबा को कई बार देखा हुआ है, जबकि बाबा से मेरी यह प्रथम भेंट थी।

ब्र.कु.प्रेम सबजोन इंचार्ज, हरिद्वार, ब्रह्माकुमारीज



अहमदाबाद। "झाड़विंग सलामत जीवन सलामत" कार्यक्रम के समापन के पश्चात ईश्वरीय स्मृति में ए.एम.टी.एस चेयरमैन बाबूभाई जदफिया, ब्र.कु. नंदा तथा अन्य।



अहमदाबाद - अमराईवाडी। गायत्री शक्ति-पीठ के द्वारा आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. उन्नति एवं महेश भाई।



भाभा नगर-हि.प्र.। चौफ पार्लियामेण्टी सेक्रेटरी नंद लाल को ईश्वरीय सौगत देते हुए ब्र.कु. कुलदीप भाई तथा अन्य।



भरतपुर। आर.डी. गर्ल्स डिग्री कॉलेज में "शिक्षा में आध्यात्मिकता" विषय पर भाषण करते हुए ब्र.कु. पूनम। मंचासनी हैं कॉलेज प्रिंसिपल मोना जी तथा अन्य।



नागल डेम। ब्र.कु. सुष्मा स्वागत करते हुए सागर मेथ्युस नकनीकी निर्देशक एन.एफ.एल, साथ में जी एम चतुर्वेदी, एन.एफ.एल तथा ब्र.कु. विवेक।



चित्तौड़गढ़(राज.)। लिंगिंग हार्ट्स-टूरिज्म कैम्पेन कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए जिला कलेक्टर रवि जैन, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. नेहा तथा ब्र.कु. सुमन।

सदा स्वस्थ जीवन

स्वर्णिम आहार से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर



नर्मला (उम्र- 46, भिवानी हरियाणा) काफी समय से कई प्रकार की बीमारियों से परेशान थी जैसे- घुटने का दर्द, हाई ब्लड प्रेशर, कलेजे का दर्द, मोटापा आदि। कुछ समय पहले मेरा ब्र.कु. ललित से मिलना हुआ और उनसे ही मुझे मेरी बीमारियों और परेशानियों का समाधान मिला। मैंने उनकी बताई हुई "स्वर्णिम आहार पद्धति" का विधिवत तरीके से पालन किया और अपनी परेशानियों से छुटकारा पाया।

उन्होंने मुझे घुटनों के दर्द के लिए डेढ़ मास तक केवल नीम्बू पीने की सलाह दी, साथ में और कुछ नहीं लेना को कहा। उन्होंने जैसा कहा, मैंने वैसा ही किया। मैं आधे नीम्बू से शुरुआत करते हुए 15 नीम्बू तक पीने लगी। पहले मुझे एक नीम्बू पीना भी बहुत मुश्किल लगता था पर मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया कि अब शुरु कर दिया है तो करना ही है।

मुझे घुटनों में इतना दर्द था कि कुर्सी पर बैठकर उठना काफी मुश्किल लगता था। जब मैंने नीम्बू पीना शुरु किया तो 4 दिन में ही काफी फर्क महसूस हुआ। जब मैं ज्यादा नीम्बू लेने लगी तो कई बहनों ने कहा कि पेट में एसिड इकट्ठा हो जाएगा, कई कहने लगे कि अन्दर सारा ज़हर फैल जाएगा, कैसर हो जाएगा। सब



हमारी बड़ी दीदी से कहने लगे कि इनको नीम्बू से छुड़ाओ नहीं तो ये बीमार हो जाएंगी, फिर ये किसी तरह से ठीक नहीं होगा और उन्हें हॉस्पिटल में लेके बैठे रहेंगे। परन्तु ललित भाई से बात करने के बाद जो हिम्मत और उमंग मिला कि नीम्बू प्राकृतिक चीज़ है, इससे कुछ नहीं होगा आप लेते रहो।

मेरे घुटने के ऑपरेशन को नौबत आने वाली थी परन्तु इस उपचार ने ऑपरेशन से मुक्त कर दिया, अब मेरे घुटने 80 प्रतिशत ठीक हैं। मेरा वजन 76 किलो हो गया था, कितने परहेज किए, प्राणायाम किए, सैर की, पर जब भी वजन चेक करती तो बढ़ा हुआ ही मिलता। लेकिन अब मेरा वजन 76 किलो से 64 किलो हो गया है। कई बार पहले रात को खीरा खा लेती थी या कोई सख्त चीज़ खाती थी तो कलेजे में इतना दर्द होता था कि इंजेक्शन लगवाना पड़ता था तब नींद आती थी लेकिन जब से दिव्य जीवन शैली अपनाई तब से बिल्कुल ही दर्द नहीं हुआ। वो भी के लिए भी मैं दवाई लेती थी वो भी छूट गई है। अब तो सचमुच ऐसा अनुभव होता है कि जोने के लिए खा रहे हैं। थोड़ी सी भूख सहन करनी है बाकी तो सब मौज ही मौज है। थोड़ी सी भूख सहन करने से इनते रोगों से मुक्त हो जाते हैं तो क्यों न सब करें, मैं तो यही प्रेरणा देती हूँ। मेरी यही शुभकामना है कि सभी इस दिव्य जीवन शैली को अपनाएं।

M - 07791846188
healthywealthyhappyclub@gmail.com
संपर्क करें केवल 1pm से 3pm के बीच में

ड्रामा की हर सीन का प्रभाव हमारे थॉट्स पर

प्रश्न :- अब मैं समझती जा रही हूँ ब्र.कु.शिवानी, आप रोज हमारे साथ ड्रॉइंग रूम में होते हैं, बात कर रहे होते हैं, यह भी तो आपके साथ एक यात्रा ही है। हर बार जो हमारा अनुभव है, हम बात करते हैं, कोशिश करते हैं यहाँ सपनें। फिर जाकर उसे पूर्ण करने की कोशिश करते हैं। तो एक रिक्रैप लेना चाहेंगे आपके साथ कि जब मैं टी.वी. के किसी भी प्रोग्राम में या फिल्म में या नॉवेल में रूचि ले रही होती हूँ तो उस समय कौन-सी घटना घटित होती है?

उत्तर:- हम ऐसा नहीं कह सकते हैं कि हम ये नहीं देखें, आप ये चूज़ करें कि हमें क्या देखना है क्योंकि सूचना तो अंदर भरी जा रही है। सिर्फ अब ये ध्यान रखें कि देखते हुए भी कैसे देखें? इसे हम दोनों जगह प्रयोग कर सकते हैं, जैसे मूवी या टी.वी. देखते हुए कैसे देखें? वही चीज़ फिर आपके दिन-प्रतिदिन के जीवन में आयेगी जो ड्रामा सारा दिन चलेगा, उसे हम ड्रामा ही कहेंगे हमारे जीवन की यात्रा भी तो एक ड्रामा ही है। अब प्रश्न है कि हम इसे ड्रामा क्यों कहेंगे? क्योंकि जीवन रूपी ड्रामा में भी एक सीन के बाद दूसरा सीन आता जाता है और इस ड्रामा में बहुत सारे एक्टर शामिल होते हैं। दोनों तरफ हमें ये सीखने को मिलता है कि ड्रामा की हर सीन को कैसे देखें? जब हम मूवी देखते या टी.वी. देखते हैं तो अपने-आपको चेक करें। अगर आप आधे घंटे का सीरियल देख रहे हैं या तीन घंटे की मूवी देख रहे हैं तो उसको देखते हुए बीच-बीच में अपने मन को भी देख लेना कि वो कैसे-कैसे थॉट्स क्रियेट करता है।

प्रश्न :- आज जब मैं आ रही थी तो एक घटना घटित हुई। पहले मैं कुछ अपने बारे में सोच रही थी। उसी बीच ड्राइवर ने गाना चला दिया वो मेरा सबसे मन पसंद गाना था। एकदम से मेरा मन हुआ और मैं गाना सुनने लग गयी। और जो मैं अपने बारे में सोच रही थी उस थॉट को तो मैं भूल ही गयी। लेकिन मैंने इस बार चाहा कि मैं जो सोच रही हूँ वो करती रहूँ। लेकिन गाने

के शब्दों का आकर्षण इतना था और तब मैंने देखा कि गानों के शब्द ना सिर्फ मुझे इन्वॉल्व करते गये बल्कि वो इमोशन भी क्रियेट करते गये। अब मैंने सोचा कि नहीं, मुझे इमोशन तक नहीं जाना है मुझे वापिस आना है। अपने थॉट्स पर फिर मेरा मन नहीं था आने का क्योंकि मैं तो उसमें ही खुश हो रही थी।

उत्तर:- वो एक उत्तेजना थी, जो मेरे अंदर जैसे इमोशन्स क्रियेट कर रही थी। खुशी और दर्द दोनों चीज़ें, हॉर्मोन्स तो स्रावित करती ही है बाँडी के अंदर और शरीर को सुचारु रूप से चलाने के लिए



ब्र. कु. शिवानी

माइंड को दोनों प्रकार के हार्मोन्स की आवश्यकता होती है, यदि मैं स्टैबल रहती हूँ तब। अगर हमने प्रैक्टिस नहीं किया है तो इसका विकास करने में आवश्यकता से अधिक समय लगता है। लेकिन मेरे शरीर की कुछ आदतें होती हैं उन हार्मोन्स को मुझे आदत पड़ी हुई है। तो मुझे कुछ ऐसा बाहर से चाहिए होता है जो उसे उत्तेजित करें। वो उत्तेजना मेरे अन्दर इमोशन्स क्रियेट करेगा और जैसे ही वो इमोशन्स क्रियेट होंगे, मेरी बाँडी के अंदर भी वो हार्मोन्स स्रावित होंगे तो मैं अच्छा महसूस करूँगी, जैसे कि मुझे वो चीज़ मिल गयी जो मुझे चाहिए थी। फिर भले ही वो दर्द के इमोशन्स हों, एड्रीनल स्रावित हो, लेकिन वो स्रावित हुआ ना, वो शरीर को चाहिए था और वो स्रावित हुआ। जब मैंने अच्छा महसूस किया तो मुझे खुशी हुई। आप जानते हैं कि ये मुझे चाहिए था कि मुझे अच्छा लगता है, जिसके लिए मैं आधे घंटे से चिल्ला रही थी। आप चिल्लाने के बाद कैसे अच्छा महसूस कर सकती हैं, नहीं तो ये कोई तर्क नहीं है। आपने आधा घंटा पिक्चर देखी कितनी देर रोये उसके साथ, यहाँ तक कि अपना रुमाल तक निकालना पड़ गया और

मूवी देखने के बाद हम कहते हैं कि हमने अच्छा महसूस किया। आपने क्या अच्छा महसूस किया। कहीं इमोशन्स अच्छी थी, क्या यह मेरी आवश्यकता थी। जैसे ड्राम है जो नुकसानदायक है लेकिन शरीर को आदत पड़ गयी है ना। जब तक शरीर को वो चीज़ मिलती नहीं है उसको आराम महसूस ही नहीं होता है। इसी तरह अगर मुझे कोई खास विशेष प्रोग्राम से प्रोत्साहन मिलता है तो फिर मैं धीरे-धीरे इससे आगे की ओर देखती हूँ कि ये तो मुझे देखा ही है। अगर आज मैं पहुँच नहीं पायी समय पर या लाइट नहीं थी घर पर, वो प्रोग्राम नहीं आ रहा है, तो मैं अच्छा महसूस नहीं करती हूँ। यह जैसे कि उसको जो चाहिए था वो नहीं मिला। जैसे कि आपने उस गीत के साथ किया। अगले समय हम सभी इसको प्रयोग करके देख सकते हैं। जब हम कुछ देख रहे हैं, पहले जब हम बैठते हैं देखने के लिए तो हमारा माइंड तुरंत ही स्टिल हो जाता है। पहले तो आपके मन पर दूसरे थॉट्स का प्रभाव पड़ता है। जब आप अपने माइंड को चेक करना शुरू करेंगे तो फिर यह आपको बहुत ही रुचिकर लगेगा। अब जैसे ही आकर बैठे टी.वी. के सामने, पहले थोड़ी देर मेरे मन में कुछ और चल रहा था जिसे मैं ऑफिस के कार्य करके, छोड़कर आया हूँ। धीरे-धीरे वो थॉट्स खत्म हो जाती है। जिसे आप छोटे स्तर पर ही अनुभव कर सकते हैं कि अब आपके मन में ज्यादा थॉट नहीं हैं। अब यह मन धीरे-धीरे शांत हो जाता है। क्योंकि ये वो वाली जो बातें घर लेकर आया था, वो बातें खत्म हो गयी। तो ये माइंड थोड़ा-थोड़ा स्टिल हो जाता है। ये जो स्थिरता को स्टेज है, ये है कि आप यहाँ हैं और प्रोग्राम वहाँ चल रहा है। आप प्रोग्राम को डिटेच ऑब्जर्वर की तरह देख रहे हैं। अब उसका प्रभाव मुझ पर नहीं पड़ रहा है लेकिन यह स्थिति बहुत थोड़े समय के लिए होती है। धीरे-धीरे हमारी जो अगली अवस्था आती है उस अवस्था में हम जजमेंटल होना शुरू हो जाते हैं। ऐसे क्यों बोल रहे हैं ये? ऐसे क्यों कर रहे हैं? ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए.....।

स्मृति दिवस-न्यारे व प्यारे बनने का प्रेरक

ब्र.कु.सूरजकुमार, माउण्ट आवू

भगवान को पाकर भी भला कोई क्यों मग्न नहीं होगा। यज्ञ-पिता प्रजापिता ब्रह्मा ने भगवान को पाया ही नहीं, वरन् उनको अपने में समा लिया, अपना तन ही परमपिता को दे दिया। और स्वयं मस्त हो गए प्रभु की मस्ती में। जिनका प्रथम आदर्श बना-कर्मों में न्यारापन, देह से न्यारापन... वे इस देह में रहते हुए भी जैसे कि इसमें नहीं रहते थे। देखने वालों को अनेक बार उनकी साकार देह दिखाई भी नहीं देती थी। और यह न्यारापन ही उन्हें सम्पूर्ण विश्व का प्यारा पिता बना सका।

ईश्वरीय ज्ञान का लक्षण ही है न्यारापन अर्थात् अलौकिकता। यदि ज्ञानी आत्माएं भी उसी तरह कर्म करें जैसे कलियुगी मनुष्य करते हैं, यदि वे भी मनुष्यों की तरह ही व्यवहार करें, यदि वे भी जीवन यात्रा में मनुष्यों की तरह ही सफर करें तो उनके ज्ञानीपन का लक्षण ही क्या। ईश्वर ने आकर कर्म करने का अलौकिक ज्ञान दिया, कर्म करने का ऐसा ज्ञान दिया जिससे आत्मा कर्म बन्धन से ही मुक्त हो जाए। व्यवहार का ऐसा ज्ञान दिया जिससे मनुष्य देव-सम प्रतीत हो। विश्व में विचरण करने का ऐसा ज्ञान दिया जिससे देखने वालों को लगे कि ये हमसे भिन्न हैं, वे इस संसार में विचरण करते हुए भी मानो यहाँ नहीं हैं।

प्रस्तुत चर्चा में ब्रह्मा बाबा के आदर्शों को सम्मुख रखते हुए हम न्यारेपन और प्यारेपन की अलौकिक स्थिति का विश्लेषण करेंगे। वास्तव में यह क्या है और कैसे ईश्वरीय सेवा में सर्वश्रेष्ठ साधन सिद्ध होती है और हमें अनेक विघ्नों से बचाकर सर्व के सहयोग के पात्र बनाती है।

हम सभी को लौकिक या ईश्वरीय परिवार में रहना होता है, सभी को कोई न कोई जिम्मेदारी भी सम्भालनी होती है। सभी को दूसरों के सम्पर्क व सम्बन्ध में भी आना होता है। परन्तु न्यारापन हमें मोहग्रस्त होने से बचाता है, न्यारापन हमें दूसरों के प्रभाव से बचाता है। अन्यथा यह बात स्वाभाविक सी हो गई है कि प्रत्येक मनुष्य सारा ही समय किसी न किसी प्रभाव में, व्यक्ति व वस्तु के प्रभाव के अधीन होकर ही चलता है, उसका मन सदा ही किसी प्रभाव से बन्धा रहता है जबकि न्यारेपन का अभ्यासी स्वयं के स्वेच्छिक विचारों का आनंद ले सकता है।

ऐसे न्यारेपन के लिए सर्वप्रथम स्वयं के देह से न्यारेपन की वृत्ति धारण करनी होगी। यही न्यारापन हमें कर्म में न्यारेपन का अनुभव करायेगा। दूसरी बात-बुद्धि में केवल अपना सम्पूर्ण लक्ष्य ही दृढ़तापूर्वक समाया हो। जैसे एक मेधावी विद्यार्थी को विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान पाने का लक्ष्य इतना दृढ़ रहता है कि उसके मन का खिंचाव, अनेक आकर्षण होते हुए भी उनकी ओर नहीं जाता। इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के जिन विद्यार्थियों को सम्पूर्णता प्राप्त करने का लक्ष्य जितना दृढ़ होगा, उतने ही वे संसार की चकाचौंध से निर्लिप्त रहते हैं।

न्यारापन सूखापन नहीं है

कई पुरुषार्थी न्यारेपन को जीवन में सूखापन समझने की भूल करते हैं। फलस्वरूप परिवार से, जिम्मेदारियों से या सेवाओं से किनारा करने लगते हैं। यह गलत है तथा मार्ग में कठिनाई पैदा करने वाला, व ईश्वरीय ज्ञान को

बदनाम करने वाला है। ऐसी प्रवृत्ति से रुष्ट होकर परिवारजन मार्ग में बाधा उत्पन्न करने लगते हैं। किनारा करना है व्यर्थ बातों से व व्यर्थ संग से। न्यारेपन का यह अर्थ नहीं है कि हम अपने परिवारजन या बच्चों से प्यार न करें, उन्हें प्यार की अनुभूति न कराएँ। प्यार सभी से हो, परन्तु बुद्धियोग एक ही परमपिता से हो। यही है यथार्थ अर्थ में न्यारापन। यह न्यारापन हमें सबका प्यारा बनाता है, कोई भी हमसे नफरत नहीं करेगा, कोई भी दुर्व्यवहार नहीं करेगा।

ब्रह्मा बाबा का न्यारापन

वे ज्यों-ज्यों अपनी सम्पूर्ण स्थिति के समीप होते गये, उन्होंने सबसे महान त्याग किया परन्तु त्याग के बाद वे उससे इतने न्यारे हो गये कि उन्होंने कभी पैसा देखा भी नहीं, उन्हें वास्तव में तो अपने त्याग की भी अविद्या हो गई। वे कहा करते थे कि-"बच्चे, बाबा ने क्या छोड़ा पत्थर ही तो छोड़े, परन्तु बदले में तो ज्ञान-रत्न मिले।" जबकि आजकल लोग थोड़ा सा त्याग करके या धन की सेवा करके उसके अहं में रहते हैं और उसका फल मान-शान के रूप में

बाबा ने हम सबके समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया। ईश्वरीय ज्ञान के बल से और सर्वशक्तित्वान के बल पर स्थिर वे आदि पुरुष वेगरी पार्ट के लम्बे समय में भी अविचलित रहे। भय और चिन्ता उन्हें छू नहीं पाई। ३५० भाई-बहनों की पालना और भण्डारे समाप्त... कल्पना करें, एक आम आदमी तो मैदान छोड़ भागे। परन्तु बाबा के चेहरे पर वही न्यारापन, वही निश्चिन्ता व वही अडोलता थी।

साथ-साथ ही चाहते हैं जिस कारण उन्हें उनके त्याग का बल प्राप्त नहीं होता।

वे इतने बड़े ईश्वरीय परिवार के पिता होते हुए तथा सभी बच्चों को सम्पूर्ण प्यार देते हुए भी न्यारे रहे। क्योंकि वे तो सतत एक परम प्रियतम के प्यार में डूबे रहते थे। मनुष्यों से प्यार को कामना न्यारेपन से दूर ले चलती है और प्यार के दातापन की भावना हमें प्यार बाँटते हुए भी न्यारेपन की श्रेष्ठ अनुभूति में रखती है।

ब्रह्मा बाबा पर सम्पूर्ण यज्ञ की, विश्व परिवर्तन की व हज़ारों बच्चों के जीवन की पूरी जिम्मेदारी थी। वे रात-दिन ईश्वरीय सेवा में, आत्माओं की समस्या हल करने में और अनेकों की पालना करने में व्यस्त रहते थे। परन्तु सदा ही बाबा को निश्चिन्त देखा गया, सदा ही

उन्हें सरलचित्त पाया गया- यह उनकी न्यारेपन की स्थिति के कारण ही था। आज एक छोटे से परिवार को सम्भालने वाले व्यक्ति का मन परेशान रहता है, उनका मन बोझिल व चिन्ताग्रस्त रहता है, क्योंकि उसने न्यारा रहना नहीं सीखा है।

बाबा, ईश्वरीय सेवा समाचार सुनते हुए, बातचीत करते हुए भी बहुत न्यारे रहते थे। उनका न्यारापन अन्त में इतनी सूक्ष्मता तक पहुँच चुका था कि जो भी उनके समीप जाता था, वह एक सुखद सन्नाटे का अनुभव करता था। सभी देखने वालों को यह अनुभव होता था कि बाबा सुनते हुए व देखते हुए भी यहाँ नहीं हैं।

अन्तिम दिनों में बाबा अति गहन शान्ति के अनुभव में रहने लगे थे। यहाँ तक कि उन्होंने अपने कमरे में लगी घड़ी को टिकटिक को भी बन्द करा दिया था। कई बच्चे प्रातः काल बाबा को गुडमॉर्निंग करने जाते थे, परन्तु उन दिनों बाबा ने कहा- बच्चे प्यार से गुडमॉर्निंग करने आते हैं तो बच्चों को मान देने के लिए बाबा को अशरीरीपन की मीठी स्थिति से नीचे उतर कर गुडमॉर्निंग करना पड़ता है और बाबा फिर अशरीरी ही जाते हैं। परन्तु उस समय बाबा को आवाज़ में आना अच्छा नहीं लगता।

बाबा ने हम सबके समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया। ईश्वरीय ज्ञान के बल से और सर्व शक्तित्वान के बल पर स्थिर वे आदि पुरुष वेगरी पार्ट के लम्बे समय में भी अविचलित रहे। भय और चिन्ता उन्हें छू नहीं पाई। 350 भाई-बहनों की पालना और भण्डारे समाप्त... कल्पना करें, एक आम आदमी तो मैदान छोड़ भागे। परन्तु बाबा के चेहरे पर वही न्यारापन, वही निश्चिन्ता व वही अडोलता थी।

निमित्त भाव से न्यारापन

प्रायः देखा जाता है कि कोई भी जिम्मेदारी या अधिकार मिलने पर मनुष्य अपने न्यारेपन के लक्ष्य को भूल कर उसका स्वरूप बन जाता है। वह यह भूल जाता है कि यह कार्य तो करन-करावनहार परमपिता का है, उसने मुझे निमित्त बनाया है। वह यह निमित्तभाव भूलकर मैं-पन की दीवारों में अटक जाता है। फलस्वरूप संगम युग के सुखों के क्षणों को बोझिल क्षणों के रूप में अनुभव करता है।

परन्तु चाहे हम ईश्वरीय सेवा के जिम्मेदार हों या परिवार के संरक्षक, हमें स्वयं को निमित्त ही समझना चाहिए। असली संरक्षक, शक्तिदाता तो सर्वशक्तित्वान है। बच्चे तो सब उसके हैं, कार्य तो उसका है, हमें तो मात्र इसे सम्पन्न करना है व इसको आधार बनाकर सर्वशक्तियों प्राप्त करनी हैं। परन्तु यदि हम इन कार्यों में ही अटक गये तो कार्य तो हमारे साथ नहीं जाएगा और अन्त में हम स्वयं को खाली व अकेला महसूस करेंगे। तो आओ हम सभी आत्माएँ इस स्मृति दिवस पर "न्यारे व प्यारे" के सन्तुलन रखने का संकल्प करें।

कर्म करते हुए भी न्यारे

कहावत है- 'नेकी कर दरिया में डाल'। तो कर्म करो, सहयोग दो, सहयोग लो और न्यारे हो जाओ। आत्माओं के साथ व्यवहार में आओ और न्यारे हो जाओ। यही हमारी अन्तिम सर्वश्रेष्ठ स्थिति है जो हमें कर्मातीत स्थिति की ओर ले चलती है।

पृष्ठ 10 पर शेष



नवरंगपुर। असिस्टेंट कमान्डेंट गणेश कुमार को ओमशांति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु.नमिता साथ में ब्र.कु.राक्षी।



निलंगा-महा.। राजयोग शिविर का दीप प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन करते हुए नगराध्यक्षा सुनिता चोपणे, वामनराव पाटील, अध्यक्ष शिवाजी विद्यालय, गंडितराव धुमाल, तहसीलदार, नामदेव टिकेकर, प्रचार संगठन अध्यक्ष, ब्र.कु.सरिता, ब्र.कु.महानंद, ब्र.कु.छाया, ब्र.कु.सुलक्षणा, गाँवदे इंगले तथा अन्य।



पटौदी। आध्यात्मिक कार्यक्रम के अन्तर्गत ई.टी.ओ. एन.के.गुप्ता को आत्मस्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.संतोष।



राजिम। थाना प्रभारी सुभाष दास को आत्मस्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.हेमा।



राजकोट। स्नेह मिलन कार्यक्रम पर दीप प्रज्वलित करते हुए मेयर रक्षा बहन, शिशु बाल कल्याण समिति की चेयरमैन लीना बहन, ब्र.कु.भगवती तथा अन्य।



शिवनी-प.प्र.। स्नेह मिलन कार्यक्रम में पधार महामण्डलेश्वर मठाधीश बलवंतानंदजी महाराज एवं उनके साथी को ईश्वरीय संदेश देकर प्रभु प्रसाद देते हुए ब्र.कु.दत्तात्रय। साथ में ब्र.कु.गायत्री।

पिताश्री के साथ के अविस्मरणीय पल



ऊटी । स्वामी विवेकानंद की 150वीं पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्रह्माकुमारीज धार्मिक प्रभाग के कोऑर्डिनेटर ब्र.कु.रामनाथ। साथ है स्वामी राघवेशानंद, डॉ. ए. अमलराज, डॉ.पी.ए.सिदीकी, स्वामी युक्तेशानंद, एवं ब्र.कु.किशान।



मुंबई-मलाड । मेडिकल कैम्प के उद्घाटन अवसर पर दीप प्रज्वलन करते हुए डॉ.अल्पा भानुशाली, फिल्म कलाकार राहुल राँय एवं कुनिका लाल, ब्र.कु.कुती, ब्र.कु.चाँद मिश्रा तथा अन्य।



राहुरी । सिविल कोर्ट में तनावमुक्त जीवन कार्यक्रम के पश्चात समूह चित्र में न्यायमूर्ति लांडगे, न्यायमूर्ति कुलकर्णी, ब्र.कु.गिरीश एवं ब्र.कु.नुंदा।



लंडन । "महिला सशक्तिकरण" कार्यक्रम के पश्चात समूह चित्र में ब्र.कु.साधना तथा अन्य।



रांची । ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित कलचरल कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बैकवर्ड क्लास कमिशन के चेयरपर्सन जस्टिस वी.ईश्वरैया, जस्टिस लोकनाथ प्रसाद, ब्र.कु.निर्मला एवं सी.ए. इंस्टीट्यूट के चेयरमैन एस.के.श्रीवास्तव।



संधवा । दिव्य उद्बोधन "आओ ज़िंदगी सुखमय बनाएँ" का उद्घाटन करते हुए राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, लायन्स क्लब अध्यक्ष बी.एल.जैन, गायत्री प्रमुख मेवालालजी, ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.निशा, ब्र.कु.छाया तथा अन्य।



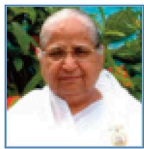
पिताश्री जी का व्यक्तित्व दिव्य था

मुंबई, सायन से ब्रह्माकुमारी सन्तोष बहन जी अपने अनुभव में कहती हैं कि ब्रह्माबाबा से मैं पहली बार सन् 1965 में मिली। उसी समय हिस्ट्री हॉल बना था, उसमें ही मैं साकार बाबा से मिली थी। बाबा से पहली मुलाकात मैं कभी भूल नहीं सकती। मैं तो मधुबन यह देखने आई थी कि ये लोग कहते हैं कि निराकार परमात्मा ब्रह्मा तन में आते हैं, वो कैसे आते हैं अथवा आते भी हैं या नहीं आते हैं। इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए ही मैं बाबा से मिलने आई थी। पहली ही नज़र में मुझे यह विश्वास हो गया कि परमात्मा शिव इसी तन में आ सकता है और कोई तन में नहीं। क्योंकि बाबा का दिव्य व्यक्तित्व और फ़रिश्ता रूप था। ऐसे रूप मैंने ज़िन्दगी में कहीं नहीं देखा था। बाबा के व्यक्तित्व और रूहानी स्नेह ने मुझे आकर्षित कर लिया। बाबा से पहली मुलाकात में ही मैंने यह फैसला ले लिया कि मुझे जीवन बनाना है तो ऐसा ही श्रेष्ठ बनाना है और बाबा की आज्ञाओं पर चलकर दूसरों का भी जीवन ऊँचा बनाना है।

पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने इतनी पालना दी है कि यह पालना न

लौकिक से मिल सकती है, न देवताओं से मिल सकती है। इतनी सुन्दर, पवित्र, सुखमय, अलौकिक परवरिश बाबा ने की है। बाबा साकार में होते भी आकारी रूप में आ-जाकर सेवा करते थे, ऐसे कइयों के अनुभव हैं। एक बार मैं किसी सेक्टर पर किसी एक समस्या का समाधान करने गयी थी। मैं जो भी करती थी बुझेन्द्रा दादी अथवा बाबा से पूछकर ही करती थी। मैंने उस स्थान से मुंबई फोन लगाया, बहुत कोशिश की, तो भी नहीं लगा। फिर मधुबन में बाबा को फोन करने की कोशिश की। वहाँ भी नहीं लगा। मैं बहुत परेशान हो गयी। क्या करूँ, परिस्थिति ऐसी थी कि मुझे दादी या बाबा से पूछना ही था। मुझे उस समय ऐसा अनुभव हुआ कि मैं इस दुनिया में अकेली हूँ, मुझे मदद करने वाला कोई नहीं है। मन बहुत भारी हो गया था, क्या करूँ समझ में नहीं आ रहा था। उतने में मुझे लगा कि मेरी बाजू में कोई आकर खड़े हुए हैं। देखा तो बाबा मुस्कराते हुए खड़े थे। मैं आश्चर्य और खुशी से दंग रहकर बाबा को ही देख रही थी। बाबा ने कहा, बच्ची, तुम अकेली कहाँ हो? बाबा तुम्हारे साथ है, सदा रहेगा। उस दिन से लेकर आज तक मुझे अकेलेपन की महसूसता कभी हुई ही नहीं।

-ब्र.कु. संतोष महाराष्ट्र एवं आंध्र प्रदेश क्षेत्र की संचालिका



बाबा की दृष्टि मिलते ही मेरे स्वास्थ्य में परिवर्तन आया

ब्र.कु. पुष्पा बहन जी कहती हैं, सन् 1956 में कर्नाल में सेवा आरम्भ हुई। तब मैं, लौकिक माँ तथा लौकिक बहन सावित्री जी के साथ नियमित ज्ञान-अमृत का लाभ लेती रही। बाबा से मिलने से पूर्व बाबा को मैंने पत्र लिखा कि सेवा में समर्पित होने की मेरी बहुत इच्छा है। मनोहर दादी जी को वो पत्र दिया। दादी जी ने भी बाबा को हमारे परिवार का समाचार तथा मेरे स्वास्थ्य के बारे में लिखा कि तबीयत बहुत नाजुक है। ठीक 7 दिन के बाद बाबा का लाल अक्षरों में हस्तलिखित पत्र पाया। बाबा ने लिखा था, 'बच्ची का पत्र पाया। अगर यज्ञ में रहना चाहती है तो रह सकती है। अगर बच्ची बीमार है तो इसका इलाज देहली में कराया जा सकता है। बशर्ते माँ (मम्मा) से मिले।' लगभग 15 दिन के बाद मम्मा-बाबा का देहली में आगमन

हुआ। मैं, मनोहर दादी जी तथा लौकिक माता जी के साथ देहली पहुँची। पहली मुलाकात में ही बाबा के अलौकिक व्यक्तित्व की छाप मेरे मानस पटल पर अंकित हो गयी। बाबा को फ़रिश्ते के रूप में देखकर अंतरात्मा ने महसूस किया कि जो पाना था सो पा लिया। प्यारे बाबा ने जो पत्र लिखा था कि बच्ची का इलाज देहली में कराया जा सकता है - यही वाक्य मेरे लिए वरदान सिद्ध हुआ। देहली भूमि पर बाबा की दृष्टि मिलते ही मेरे स्वास्थ्य में परिवर्तन आना आरम्भ हुआ। जो दवाइयाँ और परहेज मैं करती थी, सब बन्द कर दिये, बाबा ने दृष्टि से ही मुझे निरोगी भव का वरदान दे दिया। बाबा को पाकर गीत की ये पंक्तियाँ याद आ गयीं, 'किसी ने अपना बनाके मुझको, मुस्कुराना सिखा दिया...। मेरे जीवन को देख लौकिक के कई सदस्य ज्ञान में चलने लगे और कई समर्पित रूप से सेवायें देने लगे।

-ब्र.कु.पुष्पा विदर्भ क्षेत्रीय संचालिका, नागपुर (महाराष्ट्र)



मेरे दिल से निकला कि यही है, यही है

अहमदाबाद, महादेव नगर की ब्र.कु. चन्द्रिका बहन जी कहती हैं कि सन् 1965 की बात है कि एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में करीब 3.30 बजे मैं कुर्सी पर बैठी थी। ईश्वर-चिन्तन में ही मगन थी। तभी मैंने सफेद प्रकाश की काया वाले व्यक्ति में लाल प्रकाश को प्रवेश करते देखा। कुछ ही सेकेण्ड के बाद वह आकर्षक स्वरूप मेरे निकट आया। मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा, बच्ची, मैं भारत में आया हूँ, तुम मुझे ढूँढ लो। बहुत ही स्पष्ट रूप से दो बार यह आवाज़ मैंने सुनी और तभी से लेकर मैं कई सत्संगों में, धर्मगुरु, धर्म-उपदेशक और धर्म-प्रचारकों के पास जाने लगी कि जिन्हें ध्यानावस्था में देखा था वह मुझे ज़रूर कभी साकार में मिल जायेंगे। काफी सत्संगों में जाने के बावजूद भी मुझे उस दिव्य पुरुष के दर्शन नहीं हुए। कुछ मास के बाद हमारे नजदीक

ब्रह्माकुमारी ईश्वरवी विश्व विद्यालय की ओर से साप्ताहिक कोर्स का आयोजन हुआ। मेरे माता-पिता सहित पूरे परिवार ने तो सात दिन जाने का फैसला कर लिया लेकिन मैंने इन्कार कर दिया था। आखिरकार एक दिन पिताजी ने कहा-बेटा तुम भी चलो, तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा। उस दिन मैं पिता जी के साथ गयी। तब कल्पवृक्ष का पाठ चल रहा था। मैंने चित्र में ब्रह्मा बाबा की तस्वीर देखी और सुना कि परमात्मा शिव इनके तन से गीता-ज्ञान दे रहे हैं। इस बात को सुनते ही मुझे कुछ महोने पहले ध्यानावस्था में देखा वो दृश्य याद आ गया और मेरे दिल से आवाज़ निकली कि यही है, यही है, यही है जिस छवि को मैं इतने दिनों से तलाश कर रही थी।

-ब्र.कु.चन्द्रिका राष्ट्रीय संयोजिका युवा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज



बाबा को देखते ही लाईट का अनुभव हुआ

ब्र.कु.सत्यवती बहन जी अपने अनुभव सुनाती हैं कि प्यारे, मीठे बाबा से मेरा पहला मिलन सन् 1961 में मधुबन में हुआ। जैसे ही हम आये तो बाबा धोबीघाट पर खड़े थे। देखते ही बाबा ने हमें गले लगाया और कहा, "आ गयी मेरी मीठी, प्यारी बच्ची!" बाबा के यह बोल सुनते ही मुझे अनुभव हुआ कि जो कुछ है, सर्वस्व यही है। उसी क्षण मेरी बुद्धि का लगाव, झुकाव सब तरफ से खत्म हो गया। एक बार मैं अपने गाँव में सवेरे क्लास में जा रही थी तो बीच में एक चोर मिला और उसने मेरे गले की चेन खींची, मैंने उसका सामना किया। जब बाबा को मैंने यह समाचार सुनाया तो बाबा ने मुझसे कहा, यह मेरी शेरनी बच्ची है जो गुंडे का सामना करके आई है। उसी समय से डर बिल्कुल समाप्त हो गया। जब-जब कोई परिस्थिति आती है तो ऐसा महसूस होता है जैसे कि बाबा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है।

एक बार बाबा के साथ झूले में झूल रही थी। बाबा ने पूछा - बच्ची, किसके साथ झूल रही हो? मुझे ऐसे लग रहा था जैसे कि छोटे मिचनू श्री कृष्ण के साथ झूल रही हूँ। बाबा किन्ते निरहंकारी थे! मुरली क्लास पूरी होने के बाद जब बाबा उठते थे तो दरवाजे के बाहर जाने तक बाबा बच्चों को नमस्ते-नमस्ते कहते बच्चों को तरफ पीठ न करके ऐसे ही पीछे चलते थे और बाहर जाने के बाद मुड़कर जाते थे। उस समय मैंने देखा कि बाबा के मस्तक से एक ज्योति बाहर निकल रही थी। एक बार मैं अमृतवेले 3.30 बजे बाबा के पास गयी। बाबा गद्दी पर बैठे थे। जैसे ही मैंने कमरे में प्रवेश किया, बाबा ने मुझे गले से लगाया तो ऐसा महसूस हुआ जैसे कि कोई शक्ति-शाली फ़रिश्ता और रूई जैसा बहुत हल्का है। हड्डी-मांस का शरीर महसूस ही नहीं हुआ। बाबा मुझे 'फूल बच्ची' कह पुकारते थे।

-ब्र.कु.सत्यवती उपक्षेत्रीय संचालिका, तिनसुकिया असम, ब्रह्माकुमारीज

मन के संयम से मिले खुशियाँ

-ब्र.कु.निधि, कानपुर।

कहते हैं मन जीत सो जगत जीत सो मायाजीत। अर्थात् जिस मनुष्य का अपने मन तथा वृत्ति पर संयम है, वह सबके मन में जगह बनाकर सच्ची खुशी और शांति अपने साथ-साथ औरों के जीवन में भी भर देता है। हमारे मन में जैसे विचार चलते हैं या जैसी स्मृति होती है, वैसी ही वृत्ति (संस्कार) तथा उसके अनुरूप ही दृष्टि, कृति, प्रकृति व सृष्टि बनती है। आज मनुष्य की मानसिक वृत्ति खुद को व दूसरों को दुःख एवं अशांति देने वाली हो गयी है। हम इसानों की स्मृति भी आज देह और देह से सम्बन्धित व्यक्ति, पदार्थ व वैभव में फंसी हुई है। यह सब विनाशी है लेकिन अज्ञानता के कारण ही हमारी वृत्ति भी हद को हो गयी है और हम बहुत संकुचित दायरे के अन्दर सोचते व व्यवहार करते हैं। दैहिक वृत्ति के कारण मनुष्य के कर्म भ्रष्ट हो जाते हैं तथा उसका स्वभाव दुःखदायी बन जाता है। हर व्यक्ति केवल अपने सुख के विषय में सोचता है, दूसरों के सुख-दुःख से उसे कोई मतलब नहीं रहता। इस समय न तो संबंधों में मधुरता है व न ही जीवन में सुख और शांति। स्वार्थ, अहंकार, द्वेष, ईर्ष्या, बदले की भावना आदि की दरारें सभी के दिलों में पड़ गयी हैं।

कैसे पाएं जीवन में खुशी और शांति
संसार में चारों ओर तनाव, अशांति, चिंता, कटुता, थकान आदि का माहौल है। ऐसे में हर आत्मा को आंतरिक शांति की तलाश है। लेकिन आंतरिक शांति को जानना व जीवने में इस्तेमाल करना बहुत कम लोग जानते हैं। बहुत बार सुख-संपन्नता, अच्छा स्वास्थ्य होने के बाद भी लोग दुःखी, अशांत और भययुक्त रहते हैं। इसका कारण है कि आंतरिक शांति व खुशी बाह्य परिस्थितियों या वस्तुओं पर निर्भर न होकर आंतरिक स्थिति पर निर्भर करती है। हम बाहरी परिस्थितियों को ना ही बदल सकते हैं और ना ही नियंत्रित कर सकते हैं परंतु अपनी आंतरिक मनःस्थिति को बदलकर खुशी व सुख की न केवल खुद बल्कि औरों को भी अनुभूति करा सकते हैं। प्रसिद्ध दार्शनिक जेम्स एल्न के अनुसार "आदमी जितना शांत बनता जाता है, उतना वह सफल, प्रभावशाली व ताकतवान हो जाता है। मन की शांति ही विवेक का बहुमूल्य व सुन्दर रत्न है।" अब प्रश्न यह है कि हम हर समय कैसे खुशी और शांति महसूस कर सकते हैं, अपेक्षाकृत मुश्किल हालातों में भी? कुछ सुझावों व बातों को अपनाकर हम जीवन की बागिया को खुशनुमा बना सकते हैं जैसे कि:-

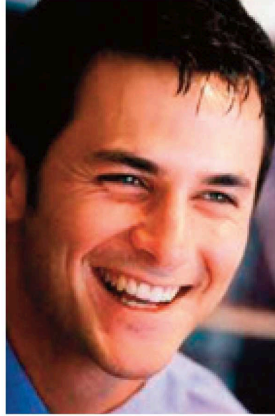
1. आजकल समाचार पत्रों तथा टी.वी. पर अधिकतर नकारात्मक खबरें आती हैं। ऐसी तनाव तथा भय पैदा करने वाले समाचार, पढ़ने-सुनने में कम समय देकर अच्छा साहित्य अथवा आध्यात्मिक पुस्तकें/सामग्री पढ़ने में समय लगायें।
2. नकारात्मक चर्चाओं और विचारधारा वाले व्यक्तियों से दूर रहें। इससे आप अपने मन व बुद्धि को गलत प्रभाव से बचा सकते हैं।
3. बुरी बातों को भूलने तथा दूसरों को क्षमा करने की आदत डालें। बुरी भावनाएँ व दुर्विचार अपने को ही चोट पहुँचाते हैं।
4. जो बदल नहीं सकता, उसे वैसे ही स्वीकार करें। इससे हमारा बहुत सारा समय एवं ऊर्जा बचती है। कई बार असुविधाजनक परिस्थितियों एवं समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिन्हें हम बदल नहीं सकते। इसलिए मुस्कुराकर उन्हें अपना लें।
5. भूतकाल को बार-बार याद न करें। गुजरी हुई बुरी घटनाओं को स्मृति में लाने के बजाय

वर्तमान पर ध्यान दें।

6. संबंध-संपर्क जैसे घरवाले, दोस्त, सहकर्मी, कर्मचारी आदि से संयमित तथा प्यार-भरा व्यवहार करें।

7. संबंधों में प्रेम एवं स्नेह रखें लेकिन बहुत अधिक भावनात्मक व मानसिक जुड़ाव या आसक्ति दुःख का कारण बन सकती है।

8. अपने मन को केंद्रित करने की कोशिश करें। जब मन एकाग्रचित्त होता है तब हम चिंताओं, तनाव, नकारात्मक विचारों तथा मन की गति



हमारा अवचेतन मन भावनाओं का खोत केन्द्र होता है। अच्छा या बुरा विचार आने पर वह इसे चेतन मन को निर्णय लेने हेतु भेज देता है। जैसे कोई गर्म वस्तु या तेज धारदार औजार पकड़ने पर दर्द का एहसास होने पर यह विचार चेतन शक्ति को भेजता है ताकि सही निर्णय हो सके। इसलिए खुशी, आनंद, शांति, सुख आदि की भावनाएँ पैदा कर अच्छे विचार चेतन मन को देने का कार्य अवचेतन मन ही करता है।

पर काबू रख सकते हैं।

9. ध्यान व योग के नियमित अभ्यास से हम जीवन को बेहतर बना सकते हैं। कुछ समय प्रतिदिन ध्यान लगाने से मन बहुत शांत, स्थिर एवं प्रफुल्लित हो जाता है।

10. अपने विचारों व संकल्पों को अपने करीबियों जैसे जीवन-साथी, दोस्त या अभिभावक आदि के साथ साझा करने से फालतू खालात मन में नहीं बैठेंगे। दूसरों के अच्छे सुझावों का इस्तेमाल करके हम परिस्थिति का मुकाबला बेहतर कर सकेंगे।

इस संदर्भ में डॉ. अल्का गर्ग कहती हैं कि "हर कोई भौतिक संसाधनों को पाने की चाह अथवा दौड़ में शामिल हो रहा है। रिश्तों या इंसानों पर ध्यान देने के बजाय केंद्रित वस्तुओं पर आज मनुष्य का मन केंद्रित हो गया है। आदमी आज शहरी जंगल में तन्हा खड़ा है। जीवन को सुखमय, आनंदमय एवं शांतिपूर्ण बनाने के लिए बैलेंस जरूरी है। प्रतिदिन 15-20 मिनट आत्म-विश्लेषण करें जिससे बुरी वृत्ति का परिवर्तन कर अच्छी वृत्ति बना सकें।"

कैसे मन को खुश और शांत रखें
अपने आप को पहचानने से ही हम मन को, सदा रहने वाली खुशी तथा शांति प्राप्त कर सकते

हैं। आत्म-चिंतन के द्वारा ही मनुष्य अपने मन को प्रकाशित कर सभी पुराने बंधनों से आजाद हो सच्ची खुशी और शांति प्राप्त कर सकता है। बाहरी क्रियाएँ जैसे संगीत सुनना, घूमने जाना या किताब पढ़ना आदि से अल्पकाल की खुशी मिल सकती है लेकिन आंतरिक खुशी व शांति मन को हल्का व संयमित करने से ही मिलती है। तभी हम दूसरों को भी खुशियाँ दे सकते हैं।

मानसिक सशक्तिकरण से कैसे बदलें मन

मानसिक सशक्तिकरण के द्वारा हम अपने मन और विचारों को संयमित कर अपने एवं दूसरों के जीवन में खुशियाँ, आनंद व शांति भर सकते हैं। जैसे:-

1. बुरे वक्त और परिस्थितियों में हताश व निराशा न हों। परिस्थितियाँ बड़े-बड़े लोगों के जीवन में आती-जाती हैं। लेकिन वे परिस्थितियों को मानसिक शक्ति द्वारा परिवर्तित कर मन को स्थिर तथा शांत रख जीवन में नई ऊँचाइयों को छूते हैं। आप भी अपनी मनःस्थिति ऐसी बनाकर हालातों से सीख लें।
2. प्रतिदिन अपनी विचार शक्ति को संगठित कर जीवन के छोटे लक्ष्यों को हासिल कर खुशी एवं हर्ष महसूस करें। साथ ही हर दिन की शुरुआत दस मिनट या कुछ मिनट के गहन आत्म-चिंतन से करें। इससे आप को अपनी समस्याओं तथा चिंताओं से बाहर निकलने में आसानी होगी।
3. छोटी उपलब्धियाँ हासिल करने के बाद बड़े लक्ष्य पाने के लिए सकारात्मक सोच रखकर ध्यान केंद्रित करें। हतोत्साहित महसूस करने पर मन को सशक्त बनाकर केवल अच्छा सोचें तो जीवन में सुख और शांति सदा बनी रहेगी।

अवचेतन मन नियंत्रित करे विचारों को
हमारा अवचेतन मन भावनाओं का खोत केन्द्र होता है। अच्छा या बुरा विचार आने पर वह इसे चेतन मन को निर्णय लेने हेतु भेज देता है। जैसे कोई गर्म वस्तु या तेज धारदार औजार पकड़ने पर दर्द का एहसास होने पर यह विचार चेतन शक्ति को भेजता है ताकि सही निर्णय हो सके। इसलिए खुशी, आनंद, शांति, सुख आदि की भावनाएँ पैदा कर अच्छे विचार चेतन मन को देने का कार्य अवचेतन मन ही करता है। खुशी को भौतिक उपलब्धियों से जोड़कर देखने वाले एक्सिस बैंक के ब्रांच मैनेजर मानते हैं कि "अगर बैंक को अच्छा बिजनेस मिल रहा है तो खुशी ही खुशी है वर्ना गम ही गम"। वहीं दंत चिकित्सक डॉ. सुनिता पाठक सोचती हैं कि "आज संतुष्टता की कमी हो गई है। पहले लोग कम में भी खुश रहते थे। आज बच्चे भी बहुत भौतिकतावादी चीजों की मांग करते हैं जिससे अधिक कमाने का मानसिक दबाव पड़ता है और खुशी गुम हो जाती है। जब स्वयं खुश रहेंगे तभी दूसरों को भी खुशियाँ बांट पाएंगे"। इसके लिए मन को योग या ध्यान की शक्ति द्वारा संयमित कर शक्तिशाली बनाने से ही संतुलित जीवन जी सकते हैं। जरूरत है आज के मनुष्य का राजयोग प्रशिक्षण द्वारा आध्यात्मिक सशक्तिकरण कर उसकी स्मृति को पवित्र व शक्तिशाली बनाकर उसकी वृत्ति को बेहद का बनाने की। ऐसा इंसान विश्व के कल्याण के लिए सोचता और व्यवहार करता है। मनुष्य की बेहद की वृत्ति होने से उसकी दृष्टि आत्मिक हो जाती है तथा कर्म श्रेष्ठ हो जाते हैं। इससे उसका जीवन व प्रवृत्ति भी खुशबूदार फूल समान सुख एवं खुशी देने वाली बन जाती है।



काठमाण्डु-नेपाल। होटल व्यवसायकों के लिए आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पर्यटन उद्योग विभाग के सह सचिव मधुसुदन बुरलाकोटी, ब्र.कु. कमलेश एवं पर्यटन विकास बोर्ड के डायरेक्टर हिक्मत सिंह एर।



ऊर्जा नगर-गुज। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र के 34वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए नगरपालिका मेयर महेंद्र सिंह राणा, ब्र.कु.राजू, ब्र.कु.कैलाश, पूर्व जिला पंचायत सदस्य ललित भाई एवं ब्र.कु.रंजना।



वड़ौत। मीडिया प्रभाग की गतिविधियों से अवगत कराने के पश्चात क्षेत्र के पत्रकारों के साथ समूह चित्र में ब्र.कु.मोहिनी।



दिल्ली-हरिनगर। स्मिरिचुअल एम्पावरमेंट प्रोग्राम के पश्चात समूह चित्र में ब्रह्माकुमारीज के नेशनल मीडिया कोऑर्डिनेटर ब्र.कु.सुशांत, मैनेजमेंट एज्यूकेशन रिसर्च इंस्टीट्यूट के प्रो. ए.के.अग्रवाल, ब्र.कु.कमलेश, ब्र.कु.नेहा, ब्र.कु.सारिका तथा अन्य।



शान्तिवन-आवरोड। जम्मू-कश्मीर वन विभाग के मुख्य प्रबन्धक नवीन कुमार(आई.एफ.एस) सपरिवार शान्तिवन पधारने पर ज्ञान चर्चा के बाद ग्रुप फोटो में ब्र.कु.भूपाल तथा ब्र.कु.दीपक।



दिल्ली-उत्तम नगर। "एलिमिनेशन ऑफ वायलेंस अगेंस्ट वुमेन" कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु.विमला को किरण एचोवमेंट अर्वाइंड से सम्मानित करते हुए आई.पी.एस.विमला मेहरा (डी.जी. तिहाड़ जेल), विजय तिवारी, जनरल सेक्रेट्री (इंटरनेशनल योग कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडिया)।

अहंकार पतन की जड़ है, समर्पणता उन्नति की सीढ़ी



दिल्ली-किंग्सवे कैंप। संत निरंकारी मिशन के हरदेव सिंह जी महाराज को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.साधना।



दिल्ली-उत्तम नगर। "एलिमिनेशन ऑफ वायलेस अग्रेस्ट युमेन" कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु.चक्रधारी को किरण लाइफटाइम एचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित करते हुए मौजूद अतिथि तथा अन्य।



डिंडोरी-म.प्र। नवनिर्वाचित एम.एल.ए. ओंकार मकरम का सम्मान करने के पश्चात समूह चित्र में ब्र.कु.संगीता, जे.पी.गुप्ता, ब्र.कु.राजमोहिनी तथा अन्य।



ग्वालियर। गोदरेज कनज्यूमर प्रोडक्ट्स, मालनपुर में "माइंड मैनेजमेंट" पर वर्कशॉप कराने के पश्चात ब्र.कु.प्रहलाद, ब्र.कु.ज्योति तथा अन्य।



विद्याचल नगर-इंदौर। 12 दिवसीय "खुरानुम: जिंदगी" शिविर का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.प्रतिमा, ब्र.कु.सीमा, विपिन भावसर तथा अन्य।



कोरवा। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में विधाध्यक जयसिंह अग्रवाल, ब्र.कु.रुक्मिणी तथा अन्य।

भगवान ने गीता में यह उपदेश देते हुए कहा है कि अपने स्वभाव और विकास की स्थिति को पहचान, प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वाभाविक कर्म का, निष्ठापूर्वक पालन करना चाहिए। परंतु इसमें ईश्वर अर्पण भावना से कार्य करने में अहंकार सर्वथा लुप्त हो जाता है। अहंकार को जीतने की यही विधि है कि परमात्मा करनकरावनहार है और इसलिए जब कर्म करने के बाद भी वो भाव अंदर में निर्मित होता है कि ये ईश्वर अर्पण है, तो उसमें अहंकार लुप्त होने लगता है। अहंकार के अभाव से पूर्वाजित वासनाओं का क्षय होता है और नवीन बंधनकारक वासना उत्पन्न नहीं होती है। क्योंकि अहंकार ही सभी कमजोरियों की जड़ है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य ये सब की जड़ अहंकार है। अगर उस अहंकार को इसान जीत ले तो इन सभी विकारों को जीतना आसान हो जाता है। क्योंकि बीज को ही खत्म कर दिया, तो बीज से उत्पन्न सारी बातें स्वतः समाप्त हो जाती हैं। इसलिए कहा कि नवीन बंधनकारक वासनायें भी उत्पन्न नहीं होती हैं। इसके अतिरिक्त चित्त की शुद्धि भी प्राप्त होती है। जितना व्यक्ति अहंकार को जीत सकता है, उतना उसकी आंतरिक चित्त की शुद्धि होने लगती है। जिसका अंतःकरण शुद्ध होता है, वह परमात्मा के दिव्य स्वरूप का अनुभव प्राप्त कर सकता है। यही वास्तविक सिद्धि है। यह तभी हो सकता है, जब व्यक्ति अपने अहंकार को संपूर्ण रीति से जीत लेता है।

भगवान ने सर्वोच्च सिद्ध अवस्था अर्थात् ज्ञान की पराकाष्ठा प्राप्त करने वालों के लक्षण बताए हैं। अपनी बुद्धि से शुद्ध होकर तथा धैर्य पूर्वक मन को बश करते हुए इंद्रिय तृप्त विषयों का त्याग कर राग-द्वेष से मुक्त होकर जो व्यक्ति एकांत स्थान में वास करता है, जो अल्पाहारी हो, जो अपने शरीर, मन, वाणी को बश में रखता है, जो सदैव समाधी में रहता है तथा पूर्णतः विरक्त, मिथ्या अहंकार, मिथ्या शक्ति, मिथ्या गर्व, काम, क्रोध तथा भौतिक वस्तुओं के संग्रह से मुक्त है। जो मिथ्या स्वामित्व की भावना से रहित है तथा शांत है वह निश्चय ही आत्म साक्षात्कार के पद को प्राप्त होता है। इस प्रकार जो दिव्य पद पर स्थित

है, वह सर्वोच्च सिद्ध अवस्था का अनुभव करता है और प्रसन्न हो जाता है। वह न शोक करता है, न किसी की कामना करता है और वह प्रत्येक जीव के प्रति समभाव अर्थात् आत्म-भाव को विकसित करता है। ये सिद्ध अवस्था की या ज्ञान की पराकाष्ठा की स्थिति के लक्षण हैं। अर्जुन यहां फिर एक प्रश्न पूछता है।

प्रश्न:- जान की पराकाष्ठा क्या है?

उत्तर:- भगवान कहते हैं - जब तुम्हारी अवस्था परिपक्व हो जाती है तब भगवान, जो अलौकिक प्रभाव वाले हैं, अजर, अमर, शाश्वत् गुणधर्म वाले हैं, उसे यथार्थ जान लेते हो। ये हैं ज्ञान की पराकाष्ठा अर्थात् परमात्मा के प्रति कोई माता भद या कोई उलझान नहीं रहती है, परमात्मा जो है जैसा है

जैसे आजकल की दुनिया के अंदर हम ये बात बार-बार सुनते हैं कि कोई व्यक्ति कहता है कि मैं गुस्सा करना चाहता नहीं हूँ लेकिन आ जाता है, तो ये बात क्या सिद्ध करती है? कि गुस्सा करना चाहता नहीं हूँ, क्रोध करना चाहता नहीं हूँ लेकिन क्रोध आ जाता है अर्थात् वो प्रकृति, वो संस्कार उसको मजबूर कर रहा है। गुस्सा करने के लिए। तो इस प्रकार कमजोरी के संस्कार हमें अपनी तरफ खींचेंगे और मजबूर करेंगे। जो कमजोरी के संस्कारों के वश जीवन जीता है, उसकी गति क्या हो सकती है, वह नष्ट हो जायेगा। वो परमात्म कृपा को अनुभव नहीं कर पाता है। इसलिए हे भारत, यहां अर्जुन को भारत क्यों कहा गया,

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक बहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा



उस स्वरूप में उसको जान लेना उसको प्राप्त करने बराबर हो जाता है। वह भगवान का आश्रय लेने वाला पुरुष संपूर्ण कर्म को सदा करते हुए, ईश्वरीय कृपा में सदा रहने वाले, अविनाशी पद को प्राप्त करता है। इसलिए हे अर्जुन, संपूर्ण कर्म को मन से मुझे अर्पित करके बुद्धियोग मुझमें स्थित करो। इस प्रकार निरंतर मुझमें चित्त लगाने वाला मेरी कृपा से सर्व विघ्नों को पार कर लेता है। परमात्मा ने यही बताया। कई बार कई आत्मायें ये सोचती हैं कि भगवान की कृपा मेरे ऊपर क्यों नहीं होती है। तो भगवान ने इसका भी रहस्य बता दिया कि भगवान की कृपा किस पर होती है। जो निरंतर चित्त लगाने वाला है वह मेरी कृपा से सर्व विघ्नों को पार कर लेगा। परंतु यदि अहंकार वश तुम मेरी मत नहीं सुनोगे तो नष्ट हो जाओगे। क्योंकि तुम्हारी प्रकृति अर्थात् संस्कार तुम्हें प्रवृत्त होने के लिए मजबूर करेंगे। कौन से संस्कार? जो अशुद्ध संस्कार हैं वह उसी दिशा में प्रवृत्त होने के लिए हमें मजबूर करते रहेंगे।

क्योंकि एक अर्जुन की बात नहीं है, सारे भारतवासी अर्जुन हैं। इसलिए हे भारत, सभी भारतवासी संपूर्ण भाव से उस ईश्वर की शरण ग्रहण करो, उसकी कृपा से परम शांति को प्राप्त करो और इस प्रकार अपनी कमजोरी के जो संस्कार हैं, स्वभाव हैं, उसको खत्म कर दो, ताकि वो हमें मजबूर न करे प्रवृत्त होने के लिए। उसी के साथ भगवान कहते हैं इस प्रकार ये गुह्य गोपनीय ज्ञान मैंने तेरे लिए कहा है। इसलिए मैं तेरे हित के लिए कहूंगा। भगवान यहां दोस्ती का भाव व्यक्त करते हैं और कहते हैं - तू मेरा मित्र है, अति प्रिय है इसलिए मैं तुम्हें हित की बात ही कहूंगा। इस पर पूर्ण विचार करने के पश्चात् तू मेरी कृपा से सर्व विघ्नों को पार कर लेगा। इतना कहकर भगवान भी न्यारा हो जाता है। इतनी अच्छी ज्ञान की बात सुनाने के बाद भी हमारे ऊपर वह थोपने का प्रयास नहीं करता है, कितनी निर्मलता व्यक्त करते हैं। वे हमें सिखाने का प्रयत्न करते हैं। इतना न्यारा, निराला है परमात्मा।

पिताश्री के साथ के अविस्मरणीय पल



पिताश्री ने मुझे पारलौकिक संसार में पहुँचा दिया
लन्दन से ब्र.कु. जयन्ती बहन जो अपना अनुभव इस प्रकार लिखती हैं कि मैं जब सन् 1968 में बाबा से मिली तो बाबा ने पूछा- बच्ची, तुमको क्या करना है? मैंने कहा-बाबा, मुझे समर्पित होना है। बाबा ने बड़ी मोटी दृष्टि दी और कहा - आज रात्रि को बाबा को गुडनाइट करने आना। रात्रि को आँगन में बाबा खटिया पर बैठे थे, साथ में कई दादियाँ और भाई-बहनें भी थे। मैं और दादी जानकी भी पहुँचें। देखा वहाँ लाइट ही लाइट चमक रही थी। बाबा के खटिया के पास मोतिया के खुराबदार फूल रखे थे और बाबा सबको दृष्टि दे रहे थे। जब मैं बाबा के सम्मुख आई तो बाबा ने मुझे फूल दिये और दृष्टि दी तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि चुम्बक ने मुझे आत्मा को अपनी ओर खींच वतन में उड़ा दिया। मैं आत्मा, ज्योति की दुनिया में पहुँच गयी। बाबा ने मुझे पारलौकिक संसार में पहुँचा दिया। कुछ समय के बाद इस साकार दुनिया का आभास हुआ। देखा तो बाबा बड़े प्यार से दृष्टि दे रहे थे। बाबा ने पूछा- बच्ची, बाबा क्यों दृष्टि दे रहे हैं? दादी जानकी ने कांध हिलाते हुए इशारे से कहा-हम जानती हैं कि अब पुरानी दुनिया से मरना है और बाबा की गोद में अलौकिक जन्म लेना है।

ब्र.कु.जयन्ती यूरोप में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्रों की मुख्य निदेशिका



पिताश्री जी ने मुझे 'ज्ञान-बुलबुल' का टाइल दिया

जर्मनी की ब्र.कु. सुदेश बहन अपना अनुभव इस प्रकार सुनाती हैं कि मुझे समाज सेवा का बहुत शौक था। एक दिन घर पर मेरी मौसी आयी। जब हम दोनों टहलने गये तो मैंने उनके सामने अपने मन की इच्छा रखी कि मैं समाज सेवा करना चाहती हूँ। उन्होंने कहा कि तुम्हें सच्ची समाज सेवा करनी है। मेरे घर पर आओ, वहाँ नज़दीक मार्केट में ब्रह्माकुमारी आश्रम है, वहाँ जाकर सीखो। मैं देखती हूँ कि लोग उनके पास रोते हुए जाते हैं और मुस्कुराते हुए लौटते हैं। उनके जीवन में परिवर्तन आ जाता है। अगर तुमको समाज सेवा करनी है तो उन जैसी सेवा करो जो किसी के दुःख मिट जायें और वह सुखी बन जायें तथा दूसरों का भी जीवन बना दे। सन् 1967 को बात है। मैं दिल्ली से मधुवन आयी थी। रात को हिस्ट्री हॉल में अनुभव सुनाने लगी तो मुझे खडाऊँ की आवाज़ सुनायी पड़ी। मैंने समझा कि बाबा आ गये, तो मैं चुप हो गयी। बाबा आये नहीं तो मैंने समझा यह मेरा भ्रम होगा। फिर सुनाना शुरू किया। थोड़े समय के बाद बाबा अन्दर आये और मेरे से कहने लगे कि 'ज्ञान-बुलबुल' क्या गीत गा रही थी? बहुत अच्छा गीत गा रही थी। बाबा के यह महावाक्य भी मेरे लिए वरदान बन गये। तब से मुझे जो प्वाइंट्स अच्छी लगती थी उनको पहले अन्दर में गुनगुनाती थी और बाद में गीत की तरह सुनाती थी। इस तरह मुझमें ज्ञान का रस भर गया। बाबा के इस वरदान से मुझे ऐसे लगने लगा कि मैं ज्ञान को गुनगुना रही हूँ और गीत के रूप में दूसरों को सुना रही हूँ। बाबा ने मुझे 'ज्ञान-बुलबुल' अथवा 'ज्ञान-नाइटिंगेल' का टाइल दिया।

ब्र.कु.सुदेश जर्मनी में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्रों की मुख्य निदेशिका

कथा श्रिता

द्रोपदी ने किया पुत्रों के हत्यारे को क्षमा

महाभारत का एक प्रसंग है। द्रोपदी के पाँच पुत्र एक रात सो रहे थे। युद्ध में अश्वत्थामा के पिता द्रोणाचार्य द्रोपदी के भाई धृष्टधुम के हाथों वीरगति को प्राप्त हुए थे। अतः प्रतिहिंसा से भरे अश्वत्थामा पांडवों के शिविर में घुसे और द्रोपदी के पाँचों पुत्रों को मार डाला। अपने पुत्रों को मृत देखकर द्रोपदी विलाप करने लगी।

पांडवों के हृदय प्रतिशोध की ज्वाला में जलने लगे। अर्जुन ने अश्वत्थामा को पकड़ लिया। उसने द्रोपदी से कहा, 'तुम्हारा अपराधी सामने खड़ा है। तुम जो बोलोगी, वही दण्ड इसे दिया जाएगा।' हालांकि द्रोपदी अपने पुत्रों के अवसान से दुःख में डूबी हुई थी और क्रोध भी कम नहीं था, किंतु अश्वत्थामा को देखकर उनके हृदय में माँ की ममता उमड़ आई। उनका क्रोध शांत हो गया। वो बोलीं, 'आर्य! इन्हें छोड़ दीजिए। इनके प्राण लेने से मुझे मेरे पुत्र वापस नहीं मिल जायेंगे।' द्रोपदी के उत्तर से हैरान अर्जुन ने कहा, 'यह तुम्हारे पुत्रों का हत्यारा है। क्या इसे दण्ड देने से तुम्हें शान्ति नहीं मिलेगी?'

तब द्रोपदी बोलीं, नहीं आर्य! ये मेरे अपराधी अवश्य हैं, किंतु किसी माँ के बेटे भी हैं। जिस तरह मैं अपने पुत्रों की मृत्यु से शोक सागर में डूबी हूँ, उसी प्रकार इनके मरने से गुरु पत्नी को बहुत चोट पहुंचेगी। मैं माँ हूँ और इसलिए किसी दूसरी माँ को दुःखी करना नहीं चाहती। मैं इन्हें क्षमा करती हूँ और आप लोग भी ऐसा ही करें।' पांडवों ने अश्वत्थामा को छोड़ दिया। क्षमा पाकर उन्हें घोर पश्चाताप हुआ। वे सिर झुकाए वहाँ से चले गए। दण्ड, अपराधी में विपरीत सोच भरता है, जबकि क्षमा से उसे पछतावा होता है और वह सुधार की राह पर बढ़ता है। अतः अपने स्वभाव में क्षमा को स्थान देना चाहिए।

परमात्म समभाव में घटी अनुभूति

एक घने जंगल में ईश्वर को पूर्णतः समर्पित एक संत सभी बाह्य आडंबरों से मुक्त सादगी का जीवन व्यतीत करते थे। वे प्रत्येक शाम आसपास के ग्रामीणों को उपदेश देते। उन्हें सुनकर ग्रामीण अपने जीवन को सुधारने का प्रयत्न करते। एक दिन एक शिक्षित युवक संत के पास आया। उसने संत को प्रणाम कर अपनी जिज्ञासा रखी, गुरुजी! आप ईश्वर की बात करते हैं। क्या आपने ईश्वर के दर्शन किए हैं, जो आप साधिका इस विषय पर इतना कुछ कह पाते हैं?'

संत ने कुछ नहीं कहा और स्नेहपूर्वक उसके सिर पर हाथ फेर दिया। युवक ने समझा कि संत के पास मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है। फिर उन्होंने कहा, 'आओ हम कुछ देर यहां के बगीचे में घूमें।' बगीचे में मुलाब और रजनीगंधा के सुगंधित फूल लगे थे। युवक बोला, 'गुरुजी! इन फूलों की सुगंध से सारा वातावरण महक रहा है।' संत ने कहा, 'वत्स! तुम ठीक कहते हो, किंतु एक बात बताओ कि यह सुगंध तुम्हें दिखाई दे रही है?' युवक बोला- 'जी नहीं। सुगंध तो अनुभव की जाती है। तब संत ने कहा- 'बस यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है। तुम्हारे शरीर में जब कभी कहीं चोट लगती है, तो दर्द होता है। क्या इस दर्द को तुम देख सकते हो?' युवक बोला- 'नहीं, वह भी अनुभव ही होता है।' संत ने अंतिम रूप से युवक की समस्या का समाधान करते हुए कहा- 'आत्मा और परमात्मा के साथ भी यही बात है। आत्मा को परमात्मा की अनुभूति के द्वारा उसका साक्षात्कार होता है, न कि स्थूल नेत्रों से।' युवक अब पूर्णतः संतुष्ट था। संत का आभार मानते हुए वह चला गया। परमात्मा सदैव अनुभूति के स्तर पर ही घटता है और यह घटना तब होती है, जबकि मन पूर्णतः निर्लिप्त तथा समभाव को प्राप्त हो चुका हो।

अनुकरण... पेज 2 का शेष

जैसे लौकिक माँ-बाप अपने बच्चों की बुराईयों को सम्पूर्णतया समाकर रखते हैं, उसका कहीं वर्णन नहीं करते। ऐसे ही ये अलौकिक पिता भी अपने बच्चों की सभी ऊँच-नीच को अन्दर ही समा लेते थे, किसी से भी उसका वर्णन नहीं करते थे। वे सब बातों को यहाँ तक समा लेते थे कि व्यवहार में भी उन बच्चों को वही स्नेह व वही सम्पूर्ण शुभभावना अनुभव होती थी। सागर की तरह सबकुछ समाकर वे सदा अडोल चित्त देखे गये।

इसी प्रकार हम भी सीखें कि जो भी कुछ देखें व सुनें, उन्हें समा लें, यहाँ-वहाँ वर्णन न करें। क्योंकि वर्णन से बातें बढ़ती हैं व वातावरण बिगड़ता है और संगठन की एकता छिन्न-भिन्न हो जाती है। सभी को ऐसा लगता था कि बाबा हमारे

राजकुमार ने जानी कर्म की महत्ता

एक राजा ने अपने पुरुषार्थ से राज्य को समृद्ध बना दिया था। राज्य में प्रजा बड़ी सुखी थी क्योंकि वह प्रत्येक वर्ग के हितों को ध्यान में रखकर काम करता था। जब राजा वृद्ध हुआ तो उसे योग्य उत्तराधिकारी की चिंता सताने लगी क्योंकि उसे लगता था कि योग्य उत्तराधिकारी के बिना सुख्यवस्था, अख्यवस्था में बदल जाएगी और प्रजा को परेशानी बढ़ जाएगी। हालांकि राजा का एक बेटा था, किंतु वह अत्यधिक आलसी और कर्महीन था। वह स्वयं को मालिक समझता और शेष सभी को अपना गुलाम। यह अहंकार उसके आचरण में सदैव झलकता था। राजा उसे सुधारने के उद्देश्य से एक साधु के आश्रम में छोड़ आया। साधु ने अगले ही दिन राजकुमार को आदेश दिया, 'वत्स! यहां से पांच कोस पर एक जंगल है। तुम वहां जाकर फूलों के कुछ पौधे ले आओ और उन्हें आश्रम के अहाते लगा दो।' यह सुनते ही राजकुमार को बड़ा क्रोध आया, क्योंकि उसने तो आदेश देना ही सीखा था। चूंकि उसके पिता ने साधु की बात मानने को कहा था इसलिए वह मन मारकर जंगल गया और फूलों के पौधे लाकर आश्रम में लगा दिए। राजकुमार ने उन्हें सींचा और जानवरों से बचाने के लिए उनकी रात-दिन रखवाली की। कुछ महीनों में सारा आश्रम भांति-भांति के सुंदर फूलों से खिल उठा। राजकुमार अपनी मेहनत का ऐसा फल देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। साधु ने उसे शाबाशी देते हुए समझाया, 'वत्स! याद रखो, जो सोता है, उसका भाग्य भी सो जाता है और जो चलता है, उसका भाग्य निरंतर उसके साथ चलता है।' अब राजकुमार कर्मठ बन चुका था। राजा को अपना योग्य उत्तराधिकारी मिल गया था। कर्म, सफलता की कुंजी है। अतः सदैव कर्मरत रहना चाहिए।

संकट में मिली सहायता ही प्रभु दर्शन

परमात्मा से मिलने का मार्ग दिखाया संत सादिक ने। वे एक बहुत बड़े सुफी संत थे। एक दिन एक आदमी आकर उनसे कहने लगा, 'मैंने सुना है कि आप अल्लाहाताला से एकाकार हो चुके हैं। मुझे भी उनसे मिलवा दीजिए।' यह सुनकर सादिक मुस्कराए और बोले, 'क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मूसा से कहा गया था कि तू मुझे नहीं देख सकता? यह ईश्वरीय वचन था जो सभी समझदार जानते हैं।' इस पर उस आदमी ने कहा, 'यह बात तो मैं जानता हूँ, किंतु एक शास्त्र यह भी तो कहता है कि मेरे दिल ने परवरदिगार को देखा। कोई यह भी कहता है, 'मैं उस भगवान की आराधना करूंगा, जिसके मैं दर्शन कर सकूँ।' यह सुनकर सादिक ने कहा, 'इसके हाथ-पैर बांधकर नदी में डाल दो।' ऐसा ही किया गया। वह पानी में डूबने लगा। उसने चिल्ला-चिल्लाकर सहायता मांगी, किंतु कोई आगे नहीं आया। अंत में निराश होकर उसने कहा, 'या अल्लाह!' उसके इतना कहते ही सादिक ने उसे बाहर निकलवा लिया। फिर उससे प्रश्न किया, 'क्या तूने अल्लाह को देखा?' वह बोला, 'जब तक मैं दूसरों को पुकारता रहा, तब तक मैं परदे में रहा, किंतु जब अल्लाह से फरियाद की तो मेरे दिल में एक सुराक खुला।' तब संत ने उसे समझाया, 'जब तक तू दूसरों को पुकारता रहा, झूठा था। जब मूल अर्थात् परमात्मा को पुकारा तो जान बच गई। अब तू इसी सुराक की हिफाजत कर जिससे तुझे ईश्वर का दर्शन होगा। वस्तुतः संकट में मिली सहायता ही प्रभु दर्शन है। यदि ऐसा मानकर हर अच्छे-बुरे क्षण में परमात्मा का स्मरण किया जाए तो अंतर्मन में पैदा हुआ विश्वास हमें स्वयं और ईश्वर का सत्य बोध करा देता है।



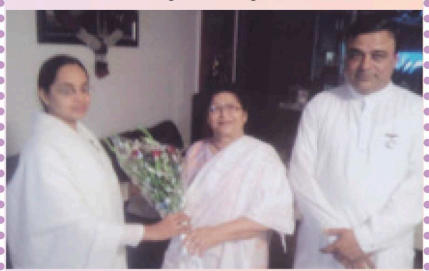
काजी नगर-जयपुर। राजापार्क हॉस्पिटल के मालिक डॉ. अजय तथा वार्ड अध्यक्ष नाटणों को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.देविका।



कटनी-म.प्र.। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन अवसर पर डॉ. मनोरमा, सविता बहन तथा ब्र.कु.लक्ष्मी समूह चित्र में।



खुसंघार-छ.ग.। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए विधायक कोरसेवाड़ा जी, ब्र.कु.अंजली, ब्र.कु.नेहा तथा अन्य समाजसेवी।



मुंबई-मलाड। कोरेओग्राफर सरोज खान के जन्मदिन पर उन्हें गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.नीरजा। साथ हैं ब्र.कु.संजय।



मलकापुर। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् कलेक्टर कर्नल वी.के.दास, मेजर पाटिल, ब्र.कु.वंदना, ब्र.कु.संतोषी तथा एन.सी.सो.सो.मुप।



मनोहर धाना। शिक्षक दिवस के कार्यक्रम में रिटायर्ड टीचर को सम्मानित करते हुए तथा आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.निशा, हार पहनते हुए प्रिंसिपल रामजीलाल, शॉल ओढ़ते हुए सरपंच नीतिराज, श्रीफल देते हुए तहसीलदार दयाल वर्मा तथा गौशाला अध्यक्ष घनश्याम भण्डारी।

उनमें सागर की तरह समाने की शक्ति थी

रोड सेफ्टी - माई च्याइस डिजिटल फोटोग्राफी कॉम्पटीशन

ब्रह्माकुमारों के ट्रान्सपोर्ट एंड ट्रेवल विंग द्वारा आयोजित, जिसमें 17 वर्ष के ऊपर के यूथ भाग ले सकते हैं। रजिस्टर करने की आखिरी तारीख 24 जनवरी है। फोटोग्राफ रोड सेफ्टी से संबंधित होंगे चाहिए जिसका मूल्यांकन दिए गए विषयों में से एक के अंतर्गत होना चाहिए।

1. आई वेल्यू लाइफ 2. राईड विद रिस्पेक्ट 3. माई विजन ऑफ ए सेफर वर्ल्ड - फोटोग्राफ JPG फॉर्मेट में होना चाहिए और हार्ड रेजोल्यूशन होना चाहिए।
फोटोग्राफ भेजें twofice01@gmail.com पर या bkroadsafety.org पर लॉग इन करें। अधिक जानकारी के लिए Phone-022-28704370, 9167995253.

आपकी खुशी आपके साथ

क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है, मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विज्ञापन के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता हुआ "पीस ऑफ माइंड चैनल", आपके शहर में उपलब्ध है।
Enquiry Mob. 18602331035, 8302022022, chanel-697

सूचना-ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा साफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-
Email- mediabkm@gmail.com
M-8107119445

प्रश्न: मैं 65 वर्षीय व्यक्ति हूँ, मेरा मन बहुत परेशान रहता है। मुझे इसका कुछ भी कारण समझ में नहीं आता। मैं कुछ समय से ब्रह्माकुमारीज से भी जुड़ा हूँ। मैं परेशानी से मुक्त सदा खुश रहना चाहता हूँ, कृपया मुझे विधि बताइये।

उत्तर: मनुष्य पूरा जीवन जो कर्म करता है व विषय वासनाओं में मग्न रहता है, वे सब अंतरात्मा में रिकॉर्ड होते रहते हैं। एक समय पर वे सब अपना रंग दिखाने लगते हैं। अब कलियुग का अन्तिम समय आ पहुंचा है, चारों ओर वातावरण में भी विकारों के प्रकम्पन हैं, इसलिए द्वापर से जो भी विकर्म जिसने भी किये हैं वे अब सभी के ब्रेन में इमर्ज होंगे। कइयों पर इसका प्रभाव आना प्रारम्भ भी हो गया है। बस यही कारण है आपकी परेशानियों का।

अब आप ज्ञान मार्ग पर आ गये हैं तो यदि आप खुश रहना चाहते हैं, बीमारियों से व समस्याओं से मुक्त रहना चाहते हैं तो पूरी तरह ज्ञान योग की साधना में लग जाएं। मन परेशान रहता है, इसलिए आप कुछ भी न करें - अब यह नहीं होना चाहिए। इसके उपचार के लिए-

आप ब्रह्म मुहूर्त में उठें - जितना भी योग लगे, करें। अन्यथा 108 बार लिखें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। फिर सवेरे थोड़ी सैर करें, आसन करें, तत्पश्चात् मुरली सुनने सेवाकेन्द्र पर जाएं। ईश्वरीय महावाक्यों का रस लें, उसे नोट करें व सारा दिन उन्हें याद रखने का प्रयास करें। घर में भी आप खाली न बैठे रहें या समय बिताने के लिए टी.वी. न देखते रहें अन्यथा आपकी परेशानी बढ़ जाएगी। सेवाकेन्द्र पर जाकर 2-3 घण्टे यज्ञ सेवा किया करें।

सारा दिन किसी न किसी स्वमान की स्मृति में रहें, अशरीरीपन का हर

घण्टे में एक बार अभ्यास करें व शाम को एक घण्टा योग करें। इसके लिए अच्छे-अच्छे गीत बजायें या योग की कमन्टी चलायें। रात को सोने से पूर्व टी.वी. न देखें बल्कि 108 बार लिखें - मैं एक महानात्मा हूँ। ये सब काम 6 मास कर लें तो आपकी शेष उम्र खुशी में व आत्म-संतोष में बीतेगी।

प्रश्न: मैं दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ, पढ़ने में होशियार थी, पर अब सब कुछ विगड़ गया है। इसका कारण है कि मैंने अपने पापा को ब्लू फिल्म देखते हुए देख लिया तो मैं भी देखने लगी। मुझे विकर्म भी हो गया। एक वर्ष पूर्व मैं ज्ञान में आ गई तो सब कुछ ठीक हो गया परन्तु मैं पुनः ब्लू फिल्म देखने लगी। यह आदत मुझे छूटती नहीं। मुझमें वासनाएँ बढ़ रही हैं, मैं दीदियों को भी नहीं बता सकती। मुझे मेरा भविष्य अंधकारमय लग रहा है, आत्महत्या करने को मन चाहता है- मैं क्या करूँ?

उत्तर: इंटरनेट जहाँ विज्ञान का वरदान है, वहीं यह अनेकों के लिए श्राप भी बनकर आया है। गन्दी फिल्मों ने अनेकों का जीवन बिगाड़ा है और अनेकों को आत्महत्या के लिए मजबूर किया है। इसलिए पहले तो आपको अपना लैपटॉप नदी में बहा देना होगा। क्योंकि आपके पापा ही विषयी हैं तो आपमें उनके संस्कार होना स्वाभाविक है।

परन्तु अब शिवबाबा हमें इन विकारों से मुक्त करने आया है। यह हाल आपका ही नहीं है, करोड़ों युवक व बड़े भी इस माया के शिकार हैं। यह कलियुग के अन्त का रावण का न्यूट्रोन बम्ब है जो इस संसार में इस

सभ्यता को नष्ट करके ही दम लेगा। आपने अब ज्ञान लिया है, तो आपके चित्त का अज्ञान अन्धकार दूर हो जाना चाहिए। आपको वासनाओं से घृणा हो जानी चाहिए क्योंकि वे आपको नष्ट कर देना चाहती हैं। आपको ज्ञान, योग की कुछ साधनायें लगातार 3 वर्ष तक करनी चाहिए।

सवेरे उठना, ईश्वरीय महावाक्य सुनना आपका प्रथम शौक होना चाहिए। स्कूल में प्रति घण्टे तीन अभ्यास एक दो मिनट अवश्य करने हैं- स्वमान का अभ्यास, अशरीरीपन का अभ्यास व अपने साथियों को आत्मा देखने का अभ्यास।

शाम के समय आपको एक घण्टा एकप्रता के साथ राजयोग का अभ्यास

करना है। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ व स्वराज्य अधिकारी हूँ- ये स्वमान 5 बार स्मृति में लाकर परमधाम में सर्वशक्तिवान पर बुद्धि को एकाग्र करना और अनुभव करना कि उनकी शक्तियों की किरणों नीचे आकर मुझमें समा रही हैं। मन भटके तो पुनः पुनः उन्हीं संकल्पों पर एकाग्र करना। इससे आपमें शक्तियाँ आयेंगी और आप मन को कन्ट्रोल कर सकेंगे।

प्रश्न: मैं एक सीनियर सिटीजन हूँ। मैंने पूरा जीवन विषय विकारों में व व्यसनो में बिताया है, कुछ ही समय से मैंने ईश्वरीय ज्ञान भी लिया है। परन्तु काम वासना मुझे बहुत सताती है। मुझे बड़ी लज्जा भी आती है। मैं बहुत पछताता भी हूँ कि मैंने अपना जीवन कैसे गन्दगी में बिताया। अब मैं उससे वाहर आना चाहता हूँ। मेरा योग भी नहीं लगता, मन भी खुश नहीं रहता - मुझे सही रास्ता चाहिए।

उत्तर: भगवानुवाच है - काम महाशत्रु है। यह अग्नि आत्मा को जलाती है व

मन को गन्दगी से भर देती है, उसकी दैहिक दृष्टि प्रबल हो जाती है व देह भान उसे दुःखी करने लगता है।

आपकी ही तरह करोड़ों लोगों की भी यही कहानी है। इस कारण लोग दुःखी हैं, रोग ग्रस्त हैं व समस्याओं के चक्रव्यूह में फँसे हुए हैं। परन्तु उन्हें इसका एहसास नहीं है। वे अज्ञान की घोर निद्रा में सोये हुए हैं।

आप भाग्यवान हैं जो जग गये हैं और इस माया से मुक्त होना चाहते हैं। ज्ञान लेकर आपने क्या-क्या पाया, उसकी एक लिस्ट बना लो। पास्ट में आपने क्या-क्या किया, इस चिन्तन में न जाकर अपने श्रेष्ठ भाग्य व प्राप्तियों का स्मरण करो। आप पायेंगे कि श्रेष्ठ चिन्तन बुरे चिन्तन को नष्ट कर देगा। श्रेष्ठ स्मृतियाँ पास्ट की बुरी स्मृतियों को विस्मृत करा देंगी।

सवेरे-सवेरे उठते ही स्वयं को सुन्दर विचारों से भरों- मैं तो अति भाग्यवान हूँ... मैं तो देव कुल की महानात्मा हूँ। अब तो स्वयं भगवान मुझे मायाजीत बनाने आ गये हैं। उनका हाथ मेरे स्तिर पर है। अब तो मुझे विश्व को पवित्रता का दान देना है। अब मुझे पास्ट की ओर नहीं, सुन्दर भविष्य की ओर चलना है। ये सुन्दर विचार मस्तिष्क में आपकी सोई हुई शक्तियों को जागृत करेंगे।

आपको प्रतिदिन 5 बार पानी को चार्ज करके पीना है तथा सवेरे या शाम को आधा घण्टा इस विधि से योग करना है। मैं पवित्र आत्मा हूँ, परमधाम में पवित्रता के सागर शिव बाबा हैं, उनकी पवित्र किरणों नीचे आ रही हैं, मुझमें समाकर मेरे पूरे शरीर में व ब्रेन में फैल रही हैं। ये संकल्प कई बार रिपीट कर सकते हैं। 3 मास ये अभ्यास करें, कर्मन्द्रियों शीतल हो जायेंगी और आपका जीवन आनन्दमय हो जायेगा।

contact - Email :- bksurya8@yahoo.com

स्मृति दिवस... पेज 5 का शेष

कर्म समाप्त करते ही कर्म के वर्णन व चिन्तन से मुक्त हो जाओ। कर्म-उपरान्त उसको महिमा सुनने या महिमा करने की इच्छा से परे होकर इस देह से न्यारे बन कर अपने वतन में परमपिता की शीतल छाया में चले जाओ और उन कर्मों को उनको समर्पित कर दो। ऐसा करने से उत्पन्न शारीरिक या मानसिक थकान भी तत्काल ही समाप्त हो जाएगी और ऐसा लगेगा कि हमने कुछ भी नहीं किया। परन्तु कर्म के बाद उनका चिन्तन या चिन्ता करना न्यारापन नहीं है। कर्म में असफल होने पर भी उसकी चिन्ता या विचलित भाव न्यारापन नहीं है। अतः कर्म समाप्त होते ही ब्रह्मा बाबा की तरह ऐसे ही न्यारे हो जाओ कि मानों सब कुछ करते हुए कुछ भी कर नहीं रहे हैं।

प्यारे बनने के लिए न्यारे बनो
किसी के भी प्यारे बनने का पुरुषार्थ करना ही गलत तरीका है। इससे सदा काल का प्यार नहीं मिलता। अतः चाहे आप आत्माओं का प्यार पाना चाहते हैं या

परमात्मा का, अपने लौकिक परिवार में सबके प्यारे बनना चाहते हैं या ईश्वरीय परिवार में - उसके लिए यथार्थ पुरुषार्थ है-न्यारा-पन।

इस सम्बन्ध में भगवानुवाच है - जो देह से न्यारा बनने में जितना आगे होंगे, वे विश्व का प्यारा बनने में भी उतना ही आगे होंगे। जो आत्माओं का प्यारा बनने का पुरुषार्थ करते हैं वे आत्माओं से भी व बाप से भी उतना ही दूर हो जाते हैं।

सचमुच न्यारी वस्तु तो सबको ही अच्छी लगती है। एक न्यारी वस्तु की ओर स्वतः ही सबका ध्यान जाता है। हमारा न्यारापन सभी को रूहानियत की ओर आकर्षित करेगा। यह न्यारापन ही सत्य ईश्वरीय ज्ञान को प्रत्यक्ष करेगा। यह न्यारापन ही तो दिव्यता है-जो संसार में और कहीं नहीं बल्कि ईश्वरीय बच्चों के जीवन में ही देखा जा सकता है।

न्यारेपन का अभाव, सेवाओं में विघ्न
इस न्यारेपन के अभाव में ही, कहीं भी एक आत्मा दूसरे के गुणों से या सेवाओं से प्रभावित होकर उनमें अटक जाती है और उसका ही प्यारा बनने का पुरुषार्थ

करने लगती है। और यही लौकिकता ईश्वरीय जीवन में विनाशकारी सिद्ध होती है, सेवाओं को असफल करती है व वातावरण में दूषितता लाती है। सेवाओं में आसक्त भाव यथार्थ लक्ष्य से दूर ले जाता है और परिणामतः न सेवाएँ फलीभूत होती हैं और न ही लक्ष्य प्राप्त होता है। अतः हमारी स्थिति ऐसी न हो जो कोई कहे कि ये तो केवल अमुक व्यक्ति को ही प्यार करते हैं, उन्हें ही चाहते हैं, ईश्वरीय सेवा तो बल प्रदान करती है। हम यदि सेवाओं से चिन्तित हैं, हम यदि सेवाओं की व्यस्तता के कारण स्वस्थिति में नहीं रहते तो यह हमारे न्यारेपन के अभाव के कारण ही है।

तो आओ हम सभी, इस 45वें स्मृति दिवस पर न्यारेपन की स्मृति से स्वयं को रूहानियत से भरें। समय के इस अन्तिम चरण में देह व देह के पदार्थों से न्यारे होने का दृढ़ संकल्प करें ताकि साकार ब्रह्मा की मूर्त हममें साकार हो सके और आने वाले विकट काल के विकट प्रभाव से मुक्त रहकर, ईश्वर का दिव्य दर्पण बनकर, हम सब तड़पती आत्माओं को शान्ति प्रदान कर सकें।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान - मैं बाप समान सम्पूर्ण पवित्र आत्मा हूँ।

प्रथम सप्ताह मैं परम पवित्र जगमगाली ज्योति हूँ। भृकुटी सिंहासन पर विराजमान मुझ पवित्र आत्मा से निरंतर निकल रहे पवित्र वायब्रेशन्स विश्व की सर्व दुःखी, अशांत आत्माओं को सुख, शांति की अंचली दे रहे हैं। सर्व आत्माएं आत्मिक शांति का अनुभव कर तृप्त हो रही हैं... प्रकृति के पांचों तत्व पावन बन रहे हैं...।
मैं मास्टर पवित्रता का सूर्य हूँ - मैं पवित्रता का सूर्य ग्लोब पर स्थित होकर संसार से अपवित्रता के अंधकार को दूर कर रहा हूँ। पवित्रता के सागर से पवित्रता की श्वेत रश्मियां मेरे ऊपर आ रही हैं और मुझे सारे चारों ओर फैल रही हैं। मैं परम पवित्र फरिश्ता इस देह से निकलकर फरिश्तों की दुनिया में चला जाता हूँ, जहां प्रकृति के पांचों तत्व हाथ जोड़कर मेरे सामने खड़े हैं। मैं बाबा से पवित्र किरणों लेकर उन्हें पावन बना रहा हूँ।

सदा चाद रहे - मैं आत्मा इस धरती पर पवित्रता के वायब्रेशन्स फैलाने के लिए ही अवतरित हुई हूँ। पवित्रता, बापदादा से प्राप्त हुआ वरदान है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने के लिए छत्रछाया है। पवित्रता भविष्य 21 जन्मों के प्रालम्ब का आधार है। पवित्रता मुझ आत्मा का स्वधर्म है। पवित्रता का दान देना मुझ आत्मा का स्वभाव है। पवित्रता दुनिया की स्थापना में मन्सा, वाचा, कर्मणा में तत्पर रहना मुझ आत्मा का श्रेष्ठ कर्तव्य है। पवित्रता मुझ आत्मा का मुख्य श्रृंगार है। पवित्र संकल्प ही मेरी बुद्धि का भोजन है। पवित्रता के सागर शिवबाबा ने स्वयं मुझे पवित्र दुनिया के महान कार्य को पूर्ण करने के निमित्त बनाया है...।
धारणा - व्यर्थ से पूरी तरह मुक्त, सदा समर्थ - बाबा ने कहा, बच्चे व्यर्थ में चले जाते हैं। संकल्प, समय, श्वास, शक्तियां, गुण आदि कई खजाने व्यर्थ ही चले जाते हैं। इसलिए हम बापदादा से दिल से प्रतिज्ञा करें - प्यारे बाबा हम व्यर्थ में नहीं जायेंगे,

न व्यर्थ सोचेंगे, न व्यर्थ बोलेंगे, न व्यर्थ समय गवायेंगे, न व्यर्थ सुनें, न व्यर्थ देखेंगे। मीठे शिव बाबा हम सदा व्यर्थ से मुक्त रह समर्थ स्थिति बनाकर अपने चलन और चेहरे से आपकी प्रत्यक्षता करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। इस प्रतिज्ञा को रोज अमृतवले बाबा के सम्मुख दोहराएंगे और दिन में विशेष अटेंशन रख अपने पुरुषार्थ में मस्त रहेंगे, अन्तर्मुखी होकर अतीन्द्रिय सुख के अनुभव में खोए रहेंगे। दृष्टि में आत्मिक भाव, मन्सा में शुभ भावना, बोल में मधुरता और कर्म में सबको संतुष्ट करने की भावना हो।
विशेष - निमित्त आत्माओं के वायब्रेशन्स चारों ओर फैलते हैं इसलिए अभी आत्माओं को एक्स्ट्रा सकाशा दो। हम सकाशा देने में इतना व्यस्त हो जाएं कि स्वप्न में भी सम्पूर्ण पवित्रता का सकाशा पूरे विश्व में फैलता रहे...। जरा भी फुर्सत मिलने पर सकाशा देने में बिजी रहें।

स्वमान - मैं बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण हूँ।

द्वितीय सप्ताह बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण अर्थात् जो बाप में गुण और शक्तियाँ हैं वही मुझमें हैं... जो बाप के संकल्प, बोल और कर्म हैं वही मेरे भी हैं... जो बाप के संस्कार वही मेरे भी संस्कार। यदि बाप को प्रत्यक्ष करना है तो जैसे बाप सम्पन्न और सम्पूर्ण है ऐसे बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकर पहले स्व को प्रत्यक्ष करें। जब स्व को प्रत्यक्ष करेंगे तो बाप स्वतः ही प्रत्यक्ष हो जायेगा।
योगाभ्यास - रुहानी एक्सरसाइज़। जैसे शरीर को शक्तिशाली बनाने के लिए शारीरिक एक्सरसाइज़ आवश्यक है, ऐसे ही मन को शक्तिशाली बनाने के लिए मानसिक एक्सरसाइज़ भी आवश्यक है - इसके लिए हर घण्टे में कम से कम पांच मिनट में पांच स्वरूपों का अभ्यास करो - पहले स्वयं को परमधाम में ज्ञानसूर्य की किरणों के नीचे देखें... फिर सूक्ष्म वतन में स्वयं को फरिश्ता रूप में देखें... फिर अपने पूज्य स्वरूप को याद करें... फिर अपने ब्राह्मण स्वरूप को याद करें... फिर अपने देवता

स्वरूप को देखें। सारे दिन में यह अभ्यास चलते-फिरते भी कर सकते हैं... इससे मन में खुशी रहेगी, उमंग-उत्साह बढ़ेगा और सदा उड़ती कला का अनुभव होता रहेगा।
धारणा - दुआएं लो और दुआएं दो। सबसे सहज पुरुषार्थ है - दुआएं दो और दुआएं लो। इसके लिए सर्व के प्रति अपनी शुभ भावनाओं को श्रेष्ठ रखो। कोई भी निगेटिव बात मन में नहीं रखो। यदि कोई किसी की निगेटिव बात को सुनाता भी है तो एक कान से सुन दूसरे से निकाल दो। अपनी श्रेष्ठ वृत्ति के वायब्रेशन्स द्वारा वायुमण्डल को ऐसा बनाओ जो कोई भी आपके सामने आए तो वह कुछ न कुछ स्नेह और सहयोग का अनुभव करे, क्षमा का अनुभव करे... हिम्मत का अनुभव करे... उमंग-उत्साह का अनुभव करे...।
चिन्तन- पुरुषार्थ में तीव्रता न होने का कारण...? सदा तीव्र पुरुषार्थी कैसे बनें? तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं की निशानियाँ क्या हैं? साधकों के प्रति - अब बापदादा समय की तीव्र गति प्रमाण हम सभी बच्चों को सदा

तीव्र पुरुषार्थी के रूप में देखना चाहते हैं। तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् सोचना और करना एक समान हो। याद रहे यदि हम अभी तक भी सोचने, एक दूसरे को देखने में समय गंवाते रहें तो भविष्य की प्राप्ति से वंचित रह जाएंगे... इसलिए अब आलस्य और अलबेलेपन के संकल्पों को त्याग मन में सदा यह दृढ़ता रहे कि जो करना है वह अभी करना है। अभी नहीं तो कभी नहीं... तब कहेंगे... सच्चे-सच्चे तीव्र पुरुषार्थी आत्मा।
 क्या आप बापदादा की आशाओं को पूर्ण करना चाहते हैं? यदि हाँ तो कारण और समस्या शब्द को नये वर्ष में विदाई दे दो। दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि हम कोई भी कारण नहीं निकालेंगे और न ही हम समस्या स्वरूप बनेंगे। इसके लिए चाहे हमें झुकना पड़े, सहन करना पड़े, भरना पड़े लेकिन अब निवारण और समाधान स्वरूप बनकर प्राण प्यारे बापदादा के साथ इस वर्ष को न्यारा और सर्व का प्यारा, मेहनत से मुक्त और समस्याओं से मुक्त वर्ष के रूप में मनाना है।

पिताश्री के साथ के अविस्मरणीय पल



पिताश्री जी ने मुझे 'विद्वान विजय लक्ष्मी' कहा

ब्र.कु. विजय बहन कहती है कि मैं बचपन से ही श्रीकृष्ण की भक्ति करती थी। घर में गीता, रामायण पढ़ते थे। प्रार्थना करती थी, 'हे श्री कृष्ण भगवान, मुझे अपने पास बुला लो। मुझे अपनी दुनिया में क्यों नहीं बुलाया, जहाँ आपके अंग-संग रहने वाले गोप-गोपियों ने इतना अतीन्द्रिय सुख पाया।' मन में यही तीव्र इच्छा बनी रही। एक दिन हमारे पड़ोस की एक बहन नांगल से यह ज्ञान सुनकर अपने घर आयी थी और साथ में त्रिमूर्ति का चित्र तथा मुरलियाँ लायी थी। एक दिन उस बहन ने त्रिमूर्ति के चित्र में ब्रह्मा बाबा का फोटो दिखाते हुए कहा कि इस ब्रह्मा-तन में शिव परमात्मा आकर यह ज्ञान सुनाते हैं, यह मुरली है। ब्रह्मा बाबा का चित्र देखते ही ऐसा अनुभव हुआ कि मैं इस बाबा से कई बार पहले भी मिली हूँ और जैसे इन मुरलियों

को पढ़ती रही हूँ। चित्र देखते-देखते मैं गुम हो गयी और इस देह की दुनिया को ही भूल किसी दूसरे लोक में पहुँच गयी। जब बाबा दिल्ली में मेजर भाई की कोठी पर आये तब लौकिक पिता जी के साथ मैं भी बाबा से मिलने गयी। बाबा की दृष्टि पड़ते ही बहुत लाइट-माइट का अनुभव हुआ। पिताश्री जी से अलौकिक, पारलौकिक बाबा के बेहद प्यार का अनुभव हुआ, फिर बाबा की दृष्टि ने वतन में उड़ा दिया। सन् 1963 में पहली बार मुधवन बाबा से मिलने गयी। एक दिन सुबह की मुरली में बाबा ने कहा मि तुम बच्चे ही विद्वान भी हो, पंडित भी हो। उसी दिन रात्रि को बाबा के साथ भोजन कर रहे थे तो बाबा अपने हाथों से मुझे गिट्टी देते हुए बोले - बच्ची, तुम पंडित, विद्वान विजय लक्ष्मी हो। जैसे कि बाबा ने मेरे में विद्वता भर दी। बच्चों के साथ बाबा जब चलते थे तो कभी-कभी खड़े होकर दृष्टि देते थे, तब ऐसे लगता था कि बाबा जैसे दूर-दूर कुछ आत्माओं के जन्मों को परख रहे हैं।

ब्र.कु.विजय जिन्द सेवाकेंद्र संचालिका, ब्रह्माकुमारीज



सम्मोह चिकित्सक-कर्नाटक। नवनिर्मित राजयोगा केन्द्र का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.पदमा, डॉ. ए.सी. श्रीराम, गल्लिंगे युप चैयमेन, बायलपा भाई, चीफ कान्ट्रक्टर, ब्र.कु.अप्पा, ब्र.कु.रूपा, ब्र.कु.सुमा, ब्र.कु.जयलक्ष्मी तथा अन्य।



वरेली-उ.प्र.। ग्रामीण महिला सशक्तिकरण अभियान को झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए जिला विकास अधिकारी डॉ. श्याम कुमार सिंह। साथ हैं ब्र.कु.पार्वती, ब्र.कु.नीता, ब्र.कु.दीपा, रसपाल राजपूत, ब्र.कु.उमेश तथा अन्य।



बैरहमपुर-ओडीशा। इण्डियन रेयर् अर्थ लिमिटेड ऑफ एटॉमिक एनर्जी में एंकिव्यूटिक्स, डी.जी.एम. तथा सी.जी.एम. के लिए आयोजित स्ट्रेस मैनेजमेंट प्रोग्राम में चीफ जनरल मैनेजर धीरेन मोहनवी, ब्र.कु.माला तथा ब्र.कु.सितार।



वलसाड। इजीनियरिंग कॉलेज के पिन्सीपल व प्रोफेसर के लिए आयोजित कर्मयोगी तालीम शिविर में कर्मयोग पर प्रवचन करते हुए ब्र.कु.रोहित।



नगर-भरतपुर। विधायक अनिता सिंह को ज्ञान चर्चा के पश्चात् ओमशांति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु.हीरा। साथ हैं ब्र.कु.संध्या तथा ब्र.कु.तारेश।



सिवान-बिहार। ब्रह्माकुमारीज सेंटर के वार्षिकोत्सव पर कैडल लाइटिंग करते हुए जे.डी.यू. लीडर अजय सिंह, ब्र.कु.सुधा तथा अन्य।

प्रभु मिलन भवन में हुआ आध्यात्मिक कला संग्रह का शुभारंभ

मेरठ। यह एक ऐतिहासिक नगरी है। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मेरठ से ही शुरू हुआ था, लेकिन आज ज़रूरत है भारत को सच्ची स्वतंत्रता दिलाने की। उक्त उद्गार मेरठ के ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र को ओर से 'आध्यात्मिक कला संग्रह' के उद्घाटन समारोह में ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर दिल्ली की निदेशिका ब्र.कु.आशा ने व्यक्त किए।

दिल्ली रोड पर मोहकमपुर क्षेत्र में दैनिक जागरण कार्यालय के पास प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीकांत वाजपेयी ने किया।

ब्र.कु.नथमल ने आध्यात्मिक कला संग्रह की विस्तृत जानकारी दीं। उन्होंने कहा कि वर्तमान में हर व्यक्ति मनोविकास के वशीभूत है और भ्रष्टाचार, अत्याचार का बोलबाला है।



मेरठ। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीकांत वाजपेयी। साथ है राजयोगिनी ब्र.कु.रुक्मिणी, ब्र.कु.चक्रधारी तथा अन्य।

आध्यात्मिक कला संग्रह को कुछ झलकियाँ।



कर्म में सुधार लाकर हम फिर से भारत को सोने की चिड़िया बना सकते हैं। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीकांत वाजपेयी ने इन प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह मेरठवासियों के लिए तोहफा है।

इस अवसर पर पूर्व डायरेक्टर, इंडस्ट्री उत्तर प्रदेश सीताराम मीणा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण की पैरवी हर कोई करता है, लेकिन ब्रह्माकुमारीज में ही समस्त शक्तियाँ,

महिला यानि मातृ-शक्ति हैं।

मेरठ मंडल की प्रभारी ब्र.कु.विनोद बहन ने कहा कि आध्यात्मिक कला संग्रह का उद्देश्य आत्मा से परमात्मा का मिलन कराना है।

एडीशनल जोन इंचार्ज राजयोगिनी

ब्र.कु.रुक्मिणी ने अपना आशीर्ष दिया। इस मौके पर केक भी काटा गया। आर.सी.पांडेय, सुमेर सिंह आदि ने इस कार्यक्रम में पूरा सहयोग दिया। इस दौरान बड़ी संख्या में अनुयायी मौजूद रहे।

२१वीं सदी में विश्व शक्ति के रूप में उभरेगा भारत

बहुप्रतीक्षित 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम में 'शक्ति के भविष्य' विषय पर हुई चर्चा। 700 से अधिक बुद्धिजीवियों ने लिया भाग।

फरीदाबाद। बहुप्रतीक्षित अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम 'फ्यूचर ऑफ पावर' ब्रह्माकुमारीज संस्था द्वारा फरीदाबाद के म्युनिसिपल ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया, जिसमें शहर के 700 से अधिक बुद्धिजीवियों ने शिरकत की। ऑस्ट्रेलिया, यू.के., जापान, केन्या सहित शहर की ख्यातिनाम हस्तियों ने एक ही मंच पर 'शक्ति के भविष्य' विषय पर टॉक शो द्वारा चर्चा की।

'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम के प्रणेता, केन्या के सुप्रसिद्ध उद्योगपति निज़ार जुमा ने कहा कि केवल भारत के पास ही वह आध्यात्मिक शक्ति है, जो हाई पावर को सॉफ्ट पावर में बदल

सकती है।

इस टॉक शो में कस्टम राष्ट्रीय अकादमी की पूर्व महानिदेशिका रशीदा हुसैन ने कहा कि शक्तियाँ हम सबमें मौजूद हैं, लेकिन पहचानने की आवश्यकता है। जब हम शांति में अंतर्मुखी हो बैठते हैं तो शक्तियाँ जागने लगती हैं और सकारात्मक विचार प्रवाह होने लगते हैं।

जीवा ग्रुप से आए स्टीव रुडाल्फ ने इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने का हर्ष व्यक्त करते हुए कहा - "पावर" यानि शक्ति, यही परमात्मा की शक्तियों का स्रोत है जो सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। लेकिन जब हम मानसिक स्तर पर इसके लिए तैयार नहीं होते, तो अंधकार ही दिखता है और शक्तियों का अभाव प्रतीत होता है। जब हम अपने मन को केन्द्रित करते हैं तभी हम अपने संकल्पों को सकारात्मक दिशा दे सकते हैं। इस तरह हम आध्यात्मिक शक्ति के सौंदर्य को गहराई



फरीदाबाद। 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का विधिवत दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए सुप्रसिद्ध उद्योगपति निज़ार जुमा तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति।

से प्रत्यक्ष कर सकते हैं। मिनिस्ट्री ऑफ पार्लियामेंट अफेयर्स डी.एच. के असिस्टेंट डायरेक्टर, मूनयनी पाण्डे ने कहा कि हम सभी के संकल्प एक हो और ऐसा निर्णय हो जो सर्वमान्य हो और जिसमें सबका कल्याण हो।

पूर्व अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट खिलाड़ी अजय रात्रा ने कहा कि अपनी

विशेषताओं को अधिक से अधिक निखारना ही शक्ति है। हमें स्वयं को और दूसरों को सदा प्रसन्न रखने का प्रयास करना चाहिए।

जैसा कि हमें अनुभव हो रहा है कि शक्ति का स्थानांतरण पश्चिम से पूर्व की ओर हो रहा है और भारत ही एकमात्र केन्द्र बिंदु है। अब ये पूर्णतः यहां के अधिनायकों पर निर्धारित है कि

वे इस शक्ति की जिम्मेवारी उठाने में समर्थ हैं या नहीं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ब्रॉडकास्ट एडीटर्स एसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी एन.के.सिंह ने कहा कि वह दिन दूर नहीं जब भारत विश्व शक्ति के रूप में उभरेगा, इसके लिए आध्यात्मिक शक्ति को सख्त ज़रूरत है।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510

सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 170 रुपये, तीन वर्ष 510 रुपये, आजीवन 4000 रुपये। विदेश - 2000 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH every month
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशंस जयपुर से मुद्रित।